उद्योग भारती

अंक 1 नवंबर, 2024

हिन्दी ने विश्वभर में भारत को एक विशिष्ट सम्मान दिलाया है। इसकी सरलता, सहजता और संवेदनशीलता हमेशा आकर्षित करती है।

- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

भारी उद्योग मंत्रालय
भारत सरकार

माननीय भारी उद्योग मंत्री श्री एच. डी. कुमारस्वामी द्वारा पदभार ग्रहण

उद्योग भारती

अंक–1 नवंबर, 2024

संरक्षक एवं प्रधान संपादक

विजय मित्तल

संयुक्त सचिव (राजभाषा)

संयुक्त संपादक

अरूण कुमार दीवान

निदेशक (कॉर्पोरेट सेल)

उप संपादक

कुमार राधारमण

सहायक निदेशक

विषय–सूची

	विषय–सूची	पृष्ठ
➢	**शुभकामनाएं**	
	माननीय भारी उद्योग मंत्री	iv
	माननीय भारी उद्योग राज्य मंत्री	v
	सचिव, भारी उद्योग	vi
	संयुक्त सचिव, भारी उद्योग	vii
➢	**संपादकीय**	viii
➢	**प्रगति की ओर बढ़ते कदम**	
*	नई सरकार में मंत्रालय की 10 महत्वपूर्ण पहल	1-4
*	मंत्रालय की प्रमुख कंपनियों पर एक नज़र	5-12
*	भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी	13-16
*	सीपीएसई की 'वार्षिक निष्पादन समीक्षा' बैठक	17

संपादन सहयोग

विकास डोगरा
निदेशक

नरेश कुमार
उप–सचिव

अंकुर भटनागर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

देवेंद्र कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

शिव पूजन यादव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सोनाली सागर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विषय–सूची		पृष्ठ
*	10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन	18
*	स्वच्छता ही सेवा अभियान	19-20
*	एक पेड़ माँ के नाम अभियान	21-22
➢	**ज्ञानलोक**	
*	कृष्ण आज भी उपादेय हैं	23-25
*	बाधाओं के बीच बढ़ती हिंदी	26-29
*	नारी तू ही नारायणी	30
*	विकसित भारत में भारी उद्योग	31-32
*	मन की बात	33-34
*	सीएमटीआई का स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और प्रिसिजन मशीन टूल्स सेंटर	35-37
➢	**कथालोक**	
*	राधा का ढाबा	38-40
*	पेड़	41-42
*	जज़्बात	43
*	नई राह – आत्मनिर्भरता, नवाचार और हरित क्रांति	44-45
*	माधव और बंटी	46-49

पत्र–व्यवहार का पता:
सहायक निदेशक एवं उप संपादक
हिंदी अनुभाग, कमरा सं. 14,
भारी उद्योग मंत्रालय, उद्योग भवन,
रफी मार्ग, नई दिल्ली– 110 011
ई–मेल:
hindisection-dhi@gov.in
वेबसाइट:
https://heavyindustries.gov.in

© सर्वाधिकार सुरक्षित।
अस्वीकरण : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के निजी विचार हैं और उनसे मंत्रालय की सहमति आवश्यक नहीं है।

विषय–सूची

	विषय–सूची	पृष्ठ
➢	**काव्यलोक**	
*	एक दिन....	50
*	तैयारी	51
*	साहस	52
*	थकान	53
*	भविष्य का बचपन	54
*	वेद	55
*	पिताजी	56
*	पापा	57
*	बारिश की ये बूँदे	58
➢	**राजभाषा के बढ़ते चरण**	
*	मंत्रालय और अधीनस्थ कार्यालय में हिंदी की प्रगति	59
*	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण	59-60
*	हिंदी सलाहकार समिति की बैठक	60
*	केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	60
*	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	61
*	हिंदी पखवाड़ा का आयोजन	61
*	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	62
*	हिंदी प्रशिक्षण	62
*	बीएचईएल को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'	62

ಹೆಚ್. ಡಿ.ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ
एच. डी. कुमारस्वामी
H. D. KUMARASWAMY

सत्यमेव जयते

मंत्री
भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of
Heavy Industries and Steel
Government of India, New Delhi

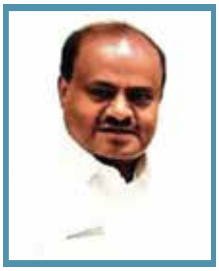

संदेश

हिंदी देशभर में सबसे ज्यादा प्रयोग की जाने वाली भाषा है। हिंदी ने देश में पत्रिकाओं और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रवेश किया है, जिससे साहित्य और संचार की भाषा के रूप में इसका महत्व रहा है।

मुझे यह जानकर खुशी है कि भारी उद्योग मंत्रालय से 'उद्योग भारती' पत्रिका के प्रथम अंक का हिंदी में प्रकाशन हो रहा है। पत्र-पत्रिका भी अपनी भावनाओं को प्रकट करने का ज़रिया होती है। यह पत्रिका उसी भावना का प्रतीक है, जो हमारे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे सकारात्मक बदलावों और अद्‌भुत योगदानों को दर्शाती है। 'उद्योग भारती' पत्रिका एक ऐसा माध्यम है, जो सभी को जोड़ने का कार्य करती है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से, हम सभी को प्रेरणा और दिशा मिलेगी, ताकि हम मिलकर एक उज्जवल भारत का निर्माण कर सकें।

इस पत्रिका के निर्माण में सभी का सहयोग अत्यंत सराहनीय है और उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आशा है, यह पत्रिका आपको रुचिकर, जानकारीपूर्ण और प्रेरणादायक लगेगी। इसमें साहित्यिक और सम-सामयिक विषयों पर ज्ञानवर्धक रचनाएं हैं और यह अंक अन्य कर्मियों को भी आगामी अंकों में अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करेगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(एच. डी. कुमारस्वामी)

Ministry of Heavy Industries : Room No. 176, 'E' Wing, 1st Floor, Udyog Bhawan, New Delhi-110 011, Phone : 91-11-23061782, Fax : 91-11-23062552
Ministry of Steel : Room No. 192, 'G' Wing, 1st Floor, Udyog Bhawan, New Delhi-110011, Tel. : +91-11-23062345, Fax : +91-11-23061395

भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा
భూపతిరాజు శ్రీనివాస వర్మ
BHUPATHIRAJU SRINIVASA VARMA

सत्यमेव जयते

इस्पात एवं
भारी उद्योग राज्य मंत्री
भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली–110011
MINISTER OF STATE FOR STEEL
AND HEAVY INDUSTRIES
GOVERNMENT OF INDIA
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI-110011

संदेश

हिंदी भारतीय संस्कृति का आईना है और इसका प्रचार-प्रसार हम सभी देशवासियों का कर्तव्य है। राष्ट्रीय एकीकरण के कार्य में हिंदी ने सदैव अहम भूमिका निभाई है। इसी क्रम में, मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारा मंत्रालय 'उद्योग भारती' नाम से हिंदी की पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। यह भारी उद्योग मंत्रालय से इस प्रकार का पहला प्रयास है जो मंत्रालय में हिंदी के कामकाज में उत्तरोत्तर प्रगति को दर्शाता है। हिंदी में कामकाज को जिन माध्यमों से बढ़ावा दिया जा सकता है, पत्रिका का प्रकाशन उनमें से एक है। संसदीय राजभाषा समिति की भी अपेक्षा होती है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों से हिंदी की पत्रिका का प्रकाशन हो।

'उद्योग भारती' के प्रकाशन को मंत्रालय में राजभाषा की प्रगति की दिशा में एक ठोस प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए। पत्रिका में निहित विविध विषयों पर आधारित रचनाएं पाठकों को आकर्षित करेंगी और इसके आगामी अंकों में लिखने के लिए प्रेरित करेंगी। पत्रिका के प्रवेशांक को कार्यरूप देने से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों को तथा इसके लिए स्वरचित रचनाएं उपलब्ध करानेवाले रचनाकारों को भी बधाई। आशा है, समय-समय पर इसका प्रकाशन जारी रहेगा और यह पत्रिका हमारे अधीनस्थ कार्यालयों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत बनेगी।

भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा
(भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा)

Ministry of Steel : 146, Udyog Bhawan, New Delhi-110011 • Tel. : +91-11-23063810, Fax : +91-11-23062703, Email : mos-steel@gov.in
Ministry of Heavy Industries : 36, Udyog Bhawan, New Delhi-110011 • Tel. : +91-11-23062676/78, +91-11-23061593, Fax : +91-11-23060584

कामरान रिजवी, भा.प्र.से.
सचिव
KAMRAN RIZVI, IAS
SECRETARY

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
भारी उद्योग मंत्रालय
नई दिल्ली–110 011
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES
NEW DELHI-110 011

संदेश

एक भाषा के रूप में हिंदी हमारे सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। स्वतंत्रता आंदोलन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह जन-जन की भाषा है और इसका अपना शब्द-सामर्थ्य है। सरलता और सहजता इसका स्वाभाविक गुण है। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया।

साहित्य भाषा के संरक्षण का माध्यम होता है। प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा की श्रीवृद्धि के लिए मंत्रालय से पहली बार 'उद्योग भारती' का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके पहले ही अंक में भारी उद्योग मंत्रालय के साथ-साथ हमारे अधीनस्थ उपक्रमों/स्वायत्त निकायों ने रचनात्मक योगदान दिया है और इस अर्थ में यह एक समेकित प्रयास है। इसमें शामिल रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक और उपयोगी हैं और हर स्तर के कर्मियों के लिए हैं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का कलेवर मंत्रालय और इसके कार्यालयों के अन्य साहित्य प्रेमियों को भी आगामी अंकों में बढ़-चढ़कर योगदान के लिए प्रेरित करेगा। इस पत्रिका/स्मारिका के प्रकाशन से जुड़ी टीम को बधाई।

कामरान

(कामरान रिज़वी)

RIGHT TO INFORMATION
Room No. 155, Udyog Bhawan, Gate No. 11, New Delhi-110011
Phone : +91-11-23063633, 23061854, Fax : 23062633, E-mail : shioff@nic.in

विजय मित्तल
संयुक्त सचिव
VIJAY MITTAL
Joint Secretary

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
भारी उद्योग मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES

संदेश

भारी उद्योग मंत्रालय की पत्रिका 'उद्योग भारती' के प्रथम अंक की सामग्री का अवलोकन करते हुए मुझे अत्यन्त गर्व का अनुभव हो रहा है। पत्रिका के पेशेवर स्वरूप से स्पष्ट है कि इसके प्रत्येक पहलू पर बारीकी से काम किया गया है।

सभी भारतीय भाषाओं पर गर्व और उनका सम्मान करते हुए संघ की राजभाषा हिंदी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और विगत वर्षों में मंत्रालय में इस दिशा में काफी काम हुआ है। पत्रिका प्रकाशन की यह श्रृंखला उसी की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिससे मंत्रालय और अधीनस्थ कार्यालयों के कर्मियों के लिए अभिव्यक्ति का एक साझा मंच उपलब्ध हुआ है। मुझे प्रसन्नता है कि प्रवेशांक में विविधतापूर्ण सामग्री को स्थान दिया गया है और इस प्रकार इसमें हर किसी के लिए कुछ न कुछ रुचिकर है। पत्रिका की सामग्री में ज्ञान भी है और नवाचार भी। मंत्रालय की उपलब्धियां भी हैं और अधीनस्थ कार्यालयों की भी। पत्रिका में राजभाषिक गतिविधियों से स्पष्ट है कि मंत्रालय से लेकर अधीनस्थ कार्यालयों तक हिंदी की गरिमा बनाए रखने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं।

एक सुरुचिपूर्ण और अभिनव प्रयास के लिए पूरी टीम को बधाई और शुभकामनाएं।

विजय मित्तल

(विजय मित्तल)

कमरा सं. 150, उद्योग भवन, नई दिल्ली – 110011, दूरभाष : 23061858, फैक्स : 23061135, ईमेल : vijay.mittal@nic.in
Room No. 150, Udyog Bhawan, New Delhi - 110011, Tel: 23061858, Fax : 23061135, Email : vijay.mittal@nic.in

संपादकीय...

आदरणीय पाठकवृंद,

'उद्योग भारती' का पहला अंक आपके हाथों में है। इस अंक के साथ भारी उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के उन गिने-चुने मंत्रालयों में सम्मिलित हो गया है, जहां से किसी हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है।

यह पत्रिका आपका अपना मंच है। आप जो कुछ भी सार्थक अभिव्यक्त कर सकते हैं, यहां उसके लिए पर्याप्त गुंजाइश है। मंत्रालय को यह देखकर प्रसन्नता है कि पत्रिका के इस पहले अंक के लिए मंत्रालय के अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ ही सभी अधीनस्थ कार्यालयों के कर्मियों ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी की है।

पत्रिका के लिए प्राप्त रचनाएं इतनी विविधतापूर्ण हैं कि इनमें हर किसी की रुचि का कुछ न कुछ है। इन रचनाओं में तकनीक भी है, संवेदना भी। प्रकृति की विराटता भी है और मन का कोना भी। हर सरकारी कर्मी अपने कार्यालयीन दायित्वों से इतर भी एक व्यक्तित्व लिए होता है और ये रचनाएं इसी का प्रतिबिंब हैं।

पत्रिका के लिए प्राप्त सभी प्राप्त रचनाएं एक निश्चित दायरे में श्रेष्ठ हैं। इसे संयोग मात्र समझा जाए कि इनमें से कुछ को ही पुरस्कृत किया जा रहा है क्योंकि किसी भी प्रतियोगिता में पुरस्कारों की संख्या सीमित होती है। अपनी भावनाओँ और समझ को शब्द दे पाने की कला ही वास्तविक पुरस्कार है।

शुभेच्छु

विजय मित्तल

विजय मित्तल
संयुक्त सचिव (राजभाषा)

नई सरकार में मंत्रालय की 10 महत्वपूर्ण पहल

विजय मित्तल

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, हमारा देश आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से शक्तिशाली भारत के निर्माण की ओर एक उल्लेखनीय यात्रा पर निकल पड़ा है। माननीय प्रधानमंत्री के सपनों को साकार करने के लिए, भारी उद्योग मंत्रालय ने नई सरकार के कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण पहल शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य भारत में विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देना, स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहित करना और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की देश की क्षमता को बढ़ाना है। ऐसी ही कुछ महत्वपूर्ण पहल की संक्षिप्त जानकारी:

1. 10 गीगावाट प्रति घंटे की पीएलआई एसीसी विनिर्माण क्षमता के लिए कार्य आवंटन

उन्नत रसायन सेल (एसीसी) बैटरी भंडारण के लिए उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) स्कीम के तहत भारी उद्योग मंत्रालय ने 4 सितंबर, 2024 को मैसर्स रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को 10 गीगावाट प्रति घंटे की क्षमता निर्मित करने का कार्य सौंपा है। इस पहल का उद्देश्य इलेक्ट्रिक वाहन और अक्षय ऊर्जा भंडारण की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए घरेलू स्तर पर एसीसी के निर्माण को बढ़ावा देना है।

2. पीएम ई-ड्राइव स्कीम

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने देश में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को बढ़ावा देने के लिए "पीएम इलेक्ट्रिक ड्राइव रिवॉल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एनहांसमेंट (पीएम ई-ड्राइव) स्कीम" को भी स्वीकृति दे दी है। स्कीम की अवधि 1 अप्रैल, 2024 (ईएमपीएस-2024 के कार्यान्वयन की तिथि) से दो वर्ष होगी और स्कीम

का परिव्यय 10,900 करोड़ रुपये होगा। इस योजना के तहत 24.79 लाख ई-दुपहिया वाहनों, 3.16 लाख ई-तिपहिया वाहनों और 14,028 ई-बसों के लिए सहायता राशि प्रदान की जाएगी। मंत्रालय इस स्कीम के तहत इलेक्ट्रिक वाहन के खरीदारों के लिए ई-वाउचर का उपयोग आरंभ कर रहा है। वायु प्रदूषण में ट्रकों की बड़ी भूमिका होती है, इसलिए यह स्कीम देश में ई-ट्रकों को भी बढ़ावा देगी। इस स्कीम में ई-एम्बुलेंस के लिए भी 500 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। इलेक्ट्रिक वाहन खरीदारों की रेंज संबंधी चिंता के समाधान के लिए यह स्कीम इलेक्ट्रिक वाहन सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशनों (ईवीपीसीएस) की स्थापना को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देगी।

3. पीएम-ईबस सेवा-भुगतान सुरक्षा तंत्र (पीएसएम) स्कीम

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने सार्वजनिक परिवहन प्राधिकरणों (पीटीए) द्वारा ई-बसों की खरीद और संचालन के लिए 'पीएम ई-बस सेवा-भुगतान सुरक्षा तंत्र (पीएसएम) स्कीम' को स्वीकृति दी है जिसका परिव्यय 3,435.33 करोड़ रुपये है। यह स्कीम वित्त वर्ष 2024-25 से वित्त वर्ष 2028-29 तक 38,000 से अधिक इलेक्ट्रिक बसों (ई-बसों) के परिनियोजन के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करेगी और एक विनिधारित निधि के माध्यम से मूल उपकरण विनिर्माताओं/प्रचालकों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करेगी।

4. भारत में इलेक्ट्रिक यात्री कार विनिर्माण संवर्धन स्कीम (एसएमईसी)

15 मार्च, 2024 से शुरू इस स्कीम का उद्देश्य वैश्विक ईवी विनिर्माताओं से निवेश आकर्षित करना और भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है। यह स्कीम 4,150 करोड़ रुपये के न्यूनतम निवेश के साथ इलेक्ट्रिक चौपहिया वाहनों के विनिर्माण के लिए सुविधा केंद्र की स्थापना के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करती है।

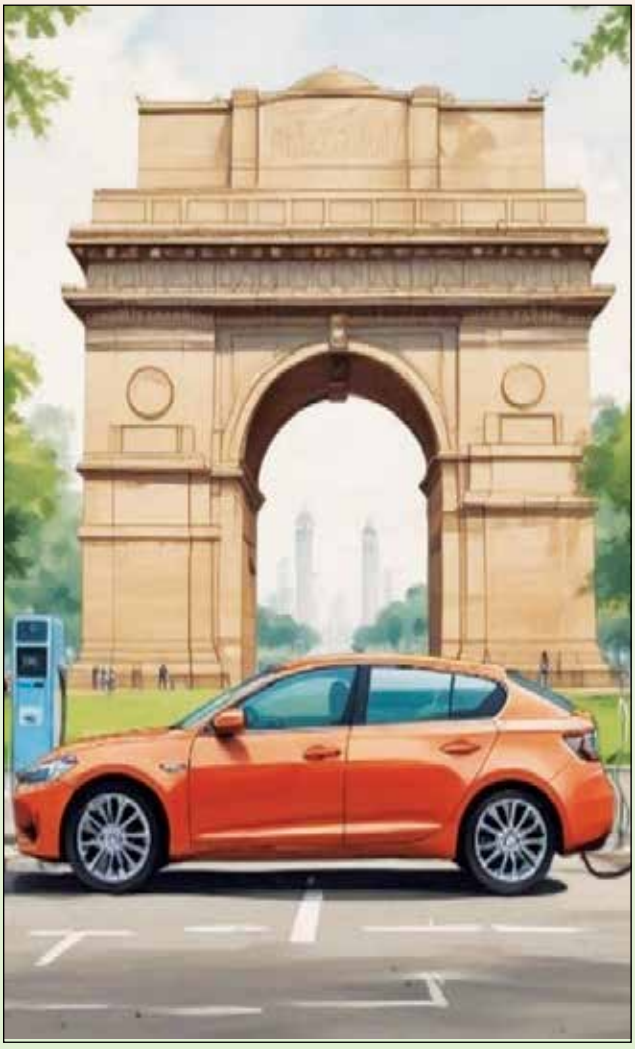

5. ऑटोमोबिल और ऑटो कंपोनेंट्स के लिए पीएलआई स्कीम

25,938 करोड़ रुपये के बजटीय परिव्यय वाली इस स्कीम का लक्ष्य उन्नत प्रौद्योगिकी वाले ऑटोमोटिव उत्पादों के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना है। इसके तहत 30 जून, 2024 तक 19,140 करोड़ रुपये का घरेलू निवेश हुआ है और 6,871 करोड़ रुपये की बिक्री हुई है। साथ ही, 32,081 नौकरियां पैदा हुई हैं।

6. ऑटोमोटिव मिशन प्लान 2024–2047

भारी उद्योग मंत्रालय ने ऑटोमोटिव मिशन प्लान 2024-2047 के निर्माण पर नज़र रखने के लिए एक शीर्ष समिति का गठन किया है। इस स्कीम का उद्देश्य ऑटोमोटिव के विनिर्माण और निर्यात में भारत को ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित करना है।

7. राष्ट्रीय पूंजीगत वस्तु नीति, 2025 का निर्माण

पूंजीगत वस्तु क्षेत्र में भारत को "वैश्विक निर्माण केंद्र" बनाने के उद्देश्य से मंत्रालय 2025 के लिए एक नई राष्ट्रीय पूंजीगत वस्तु नीति तैयार करने पर काम कर रहा है।

8. भारत कोल गैसीफिकेशन एंड केमिकल्स लिमिटेड (बीसीजीसीएल) की स्थापना

21 मई, 2024 को बीसीजीसीएल की स्थापना की गई जो भेल और कोल इंडिया लिमिटेड के बीच एक संयुक्त उद्यम है। इसका उद्देश्य स्वदेशी कोयला गैसीकरण प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ओडिशा में 2000 टीपीडी क्षमता की कोयला से अमोनियम नाइट्रेट बनाने की परियोजना स्थापित करना है।

यह पहल स्वदेशी निर्माण, स्वच्छ ऊर्जा अपनाने और देश के भारी उद्योग क्षेत्र में तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। इससे आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और वैश्विक विनिर्माण के परिदृश्य में भारत की स्थिति बेहतर करने में महत्वपूर्ण योगदान देने की आशा है।

9. एडवांस अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल (एयूएससी) प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन

भारी उद्योग मंत्रालय 1×800 मेगावाट के एडवांस अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल (एयूएससी) प्रौद्योगिकी निष्पादन वाले थर्मल पावर प्लांट के विकास के लिए सहायता प्रदान कर रहा है। इस पहल का उद्देश्य स्वदेशी प्रौद्योगिकी के साथ ताप विद्युत संयंत्रों के दक्षता स्तर को बढ़ाकर 46: करना है जो 2070 तक कार्बनमुक्ति के भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में काफी उपयोगी होगा।

10. मशीनरी और विद्युत उपकरण सुरक्षा पर सर्वव्यापी तकनीकी विनियम (ओटीआर)

भारी उद्योग मंत्रालय ने मशीनरी और विद्युत उपकरण सुरक्षा (सर्वव्यापी तकनीकी विनियमन) आदेश, 2024 की अधिसूचना को 28 अगस्त, 2024 को जारी किया है। इसका उद्देश्य उत्पाद सुरक्षा, गुणवत्ता सुनिश्चित करना तथा मशीनरी और विद्युत उपकरण के वैश्विक बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता को बढ़ाना है।

Omnibus Technical Regulation
Ministry of Heavy Industries
Government of India

–संयुक्त सचिव
भारी उद्योग मंत्रालय

मंत्रालय की प्रमुख कंपनियों पर एक नज़र

अरुण कुमार दीवान

भारत सरकार का भारी उद्योग मंत्रालय सार्वजनिक क्षेत्र के कई महत्वपूर्ण उद्यमों की देखरेख करता है जो विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंत्रालय की प्रमुख कंपनियों का इतिहास, मुख्य व्यवसाय, हाल के घटनाक्रम और देश के औद्योगिक परिदृश्य में उनका महत्व उल्लेखनीय है।

1. एंड्रयू यूल एंड कंपनी लिमिटेड (एवाईसीएल)

- **स्थापना:** 1863 में कोलकाता में
- **श्रेणी:** अनुसूची 'बी' सीपीएसई, सूचीबद्ध कंपनी
- **मुख्य व्यवसाय:** चाय, विद्युत और इंजीनियरिंग उत्पाद
- **स्वामित्व:** भारत सरकार (89.25%), संस्थान (2.20%), गैर-संस्थान (8.55%)

एंड्रयू यूल एंड कंपनी लिमिटेड का 150 वर्षों से अधिक का समृद्ध इतिहास है। प्रारंभ में इसे एक निजी कंपनी के रूप में स्थापित किया गया था, जो 1948 में एक सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी में परिवर्तित हो गई और 1979 में यह सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम बना।

एवाईसीएल का चाय प्रभाग असम और पश्चिम बंगाल में कई चाय बागानों का प्रबंधन कर रहा है। कंपनी हाल के वर्षों में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

कंपनी का विद्युत प्रभाग ट्रांसफार्मर का निर्माण करता है जबकि इसका इंजीनियरिंग प्रभाग मुख्य रूप से औद्योगिक पंखों का उत्पादन करता है।

2. भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल)

- **स्थापना:** 1964 में नई दिल्ली में
- **श्रेणी:** महारत्न और अनुसूची 'ए' सीपीएसई, सूचीबद्ध कंपनी
- **मुख्य व्यवसाय:** विद्युत उत्पादन उपकरण/संयंत्र

- **विनिर्माण क्षमता:** प्रति वर्ष 20,000 मेगावाट विद्युत संयंत्र उपकरण
- **बाजार हिस्सेदारी:** भारत के पारंपरिक विद्युत संयंत्रों की स्थापित क्षमता में 53%

बीएचईएल ऊर्जा क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा इंजीनियरिंग और विनिर्माण उद्यम है। बीएचईएल अपनी स्थापना के बाद से भारत के भारी विद्युत उपकरण उद्योग में अग्रणी रहा है। कंपनी के उत्पाद पोर्टफोलियो में विद्युत उत्पादन उपकरण (थर्मल, हाइड्रो, परमाणु, और सौर पीवी), ट्रांसमिशन सिस्टम, रक्षा और एयरोस्पेस इलेक्ट्रॉनिक्स शामिल हैं। बीएचईएल में 16 विनिर्माण प्रभाग, 2 मरम्मत इकाइयाँ, 4 क्षेत्रीय कार्यालय, 8 सेवा केंद्र, 3 विदेश स्थित कार्यालय एंव 15 क्षेत्रीय विपणन केंद्र शामिल हैं।

कंपनी ने भारत की स्वदेशी विनिर्माण क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाल के वर्षों में, बीएचईएल बदलते ऊर्जा परिदृश्य और सरकारी पहलों के अनुरूप नवीकरणीय ऊर्जा और रक्षा जैसे नए क्षेत्रों में भी कदम रख रहा है।

3. ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड (बीएंडआर)

- **स्थापना:** 1920 में कोलकाता में
- **श्रेणी:** मिनीरत्न श्रेणी-I और अनुसूची 'बी' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसाय:** सिविल और मैकेनिकल निर्माण कार्य, डिजाइन और इंजीनियरिंग

ब्रिज एंड रूफ कंपनी एक शताब्दी से अधिक के अनुभव वाली बहु-विषयक इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (ईपीसी) कंपनी है। कंपनी सिविल और संरचनात्मक इंजीनियरिंग, मैकेनिकल और पाइपिंग कार्य, विद्युत और इंस्ट्रूमेंटेशन, परियोजना प्रबंधन परामर्श जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखती है। बीएंडआर ने विभिन्न क्षेत्रों में परियोजनाएं निष्पादित की हैं जिनमें तेल, गैस, पेट्रो-रसायन, इस्पात, एल्युमीनियम, रेलवे और बुनियादी ढांचा शामिल हैं।

कंपनी बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में अपनी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने के लिए अपने परियोजना पोर्टफोलियो में विविधता लाने और परियोजना निष्पादन की अपनी क्षमताओं में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

4. द ब्रेथवेट, बर्न एंड जेसप कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (बीबीजे)

- **स्थापना:** 1935
- **श्रेणी:** अनुसूची 'सी' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसाय:** रेलवे के स्टील पुल का निर्माण

बीबीजे कंपनी की स्थापना मूलतः तीन पूर्वी भारतीय इंजीनियरिंग कंपनियों द्वारा कोलकाता में गंगा नदी पर प्रतिष्ठित हावड़ा पुल के निर्माण और स्थापना के लिए की गई थी। तब से कंपनी ने एक लंबा सफर तय किया है और विशेषकर भारतीय रेलवे के लिए इस्पात पुल निर्माण में विशेषज्ञ के रूप में उभरी है।

बीबीजे ने विभिन्न क्षेत्रों में परियोजनाओं को कार्यरूप दिया है जिनमें हावड़ा पुल (रवींद्र सेतु), विद्यासागर सेतु (द्वितीय हुगली पुल), मणिपुर, मिजोरम, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में रेलवे पुल शामिल हैं। स्टील पुल निर्माण में कंपनी की विशेषज्ञता भारत में रेल नेटवर्क के विस्तार और बुनियादी ढांचा विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

5. सीमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (सीसीआई)

- **स्थापना:** 1965
- **श्रेणी:** अनुसूची 'बी' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसाय:** सीमेंट संयंत्र

भारत की सीमेंट उत्पादन क्षमता को बढ़ावा देने और देश के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सीसीआई की स्थापना की गई थी। हालांकि, कंपनी को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और इसका मामला 1996 में औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड (बीआईएफआर) को भेज दिया गया था। 2006 में तीन संचालित संयंत्रों-बोकाजन, राजबन और तांदूर के आधुनिकीकरण के लिए पुनरुद्धार पैकेज को मंजूरी दी गई थी।

चुनौतियों के बावजूद, सीसीआई भारत के सीमेंट क्षेत्र में- विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां इसके संयंत्र चल रहे हैं- महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखे हुए है। पुनर्गठन और विनिवेश की चल रही प्रक्रियाओं का उद्देश्य कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य और प्रचालन दक्षता में सुधार करना है।

6. इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स (इंडिया) लिमिटेड (ईपीआई)

- **स्थापना:** 1970
- **श्रेणी:** मिनीरत्न श्रेणी-I और अनुसूची 'बी' सीपीएसई

- **मुख्य व्यवसाय:** इंजीनियरिंग और निर्माण सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला

ईपीआई सिविल और संरचनात्मक कार्य, प्रक्रिया संयंत्र, सिंचाई, बांध और नहर कार्य, स्मार्ट सिटी विकास जैसे क्षेत्रों में परियोजना प्रबंधन और इंजीनियरिंग सेवाएं प्रदान करता है। हाल के दिनों में कंपनी ने स्मार्ट सीमा बाड़, इलेक्ट्रॉनिक निगरानी प्रणाली और फ्लू गैस डिसल्फराइजेशन परियोजनाओं पर भी ध्यान केंद्रित है। इन नए क्षेत्रों में कदम रखकर ईपीआई स्वयं को बाजार की बदलती मांगों के अनुरूप ढाल रहा है।

7. हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचईसी)

- **स्थापना:** 1958 में रांची, झारखंड में
- **श्रेणी:** अनुसूची 'ए' सीपीएसई

- **मुख्य व्यवसाय:** भारी उपकरणों की डिजाइन और निर्माण

एचईसी भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों के लिए भारी मशीनरी और उपकरणों के निर्माण में अग्रणी रहा है। कंपनी के तीन मुख्य संयंत्र है- हेवी मशीन बिल्डिंग प्लांट (एचएमबीपी) हेवी मशीन टूल्स प्लांट (एचएमटीपी) और फाउंड्री फोर्ज प्लांट (एफएफपी) । खनन के लिए रोलिंग मिल उपकरण, स्टील प्लांट उपकरण, क्रशर और ग्राइंडिंग मिल एवं रक्षा उपकरण आदि एचईसी के प्रमुख उत्पाद हैं।

भारी इंजीनियरिंग और रणनीतिक क्षेत्रों में भारत के आत्मनिर्भर बनने से जुड़े प्रयासों में एचईसी की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है।

8. एचएमटी लिमिटेड और इसकी सहायक कंपनियां

- **स्थापना:** 1953 में बैंगलोर में

- **श्रेणी:** सूचीबद्ध और अनुसूची 'ए' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसाय:** मशीन टूल्स, घड़ियां

एचएमटी लिमिटेड (जिसे पहले हिंदुस्तान मशीन टूल्स के नाम से जाना जाता था) ने भारत के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंपनी अपनी दो सहायक कंपनियों का भी संचालन करती है :

(i) एचएमटी मशीन टूल्स लिमिटेड

- मशीन टूल्स की विस्तृत श्रृंखला का निर्माण करता है।
- इसके उत्पादों में सीएनसी मशीनें, विशेष प्रयोजन वाली मशीनें और डाई कास्टिंग मशीनें शामिल हैं।

(ii) एचएमटी (इंटरनेशनल) लिमिटेड

- निर्यात और विदेशी परियोजनाओं को संभालता है।
- आईएसओ-9001-2015 प्रमाणित है।

कंपनी हाल मे मशीन टूल्स व्यवसाय के पुनरुद्धार, आधुनिकीकरण एवं मशीन टूल्स क्षेत्र में नए बाजारों और प्रौद्योगिकियों की खोज पर ध्यान केंद्रित कर रही है। चुनौतियों के बावजूद, एचएमटी मशीन टूल्स के क्षेत्र में अपने ब्रांड मूल्य और विशेषज्ञता का लाभ उठाना जारी रखे हुए है जो भारत की विनिर्माण क्षमताओं में योगदान दे रहा है।

9. इंस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड

- **स्थापना:** 1964 में कोटा, राजस्थान में
- **श्रेणी:** अनुसूची 'बी' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसाय:** प्रोसेस उद्योगों के लिए कंट्रोल वाल्व निर्माण

इंस्ट्रूमेंटेशन और नियंत्रण उपकरण के क्षेत्र में इंस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड एक प्रमुख कंपनी रही है। कंपनी की उत्पाद श्रृंखला में कंट्रोल वाल्व, बटरफ्लाई वाल्व, सुरक्षा राहत वाल्व, बेलो सील्ड वाल्व एंव न्यूमेटिक/इलेक्ट्रिक एक्चुएटर में शामिल हैं। इंस्ट्रुमेंटेशन के क्षेत्र में कंपनी के कामकाज में उल्लेखनीय प्रगति दिखाई दे रही है।

10. नेपा लिमिटेड

- **स्थापनाः** 1947 (मूल रूप से द नेशनल न्यूज़प्रिंट एंड पेपर मिल्स लिमिटेड के रूप में)

- **श्रेणीः** अनुसूची 'सी' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसायः** न्यूज़प्रिंट, लेखन एवं मुद्रण कागज का उत्पादन

नेपानगर (मध्य प्रदेश) स्थित नेपा लिमिटेड भारत में न्यूज़प्रिंट के उत्पादन में अग्रणी रहा है। इसके पास 1200 एकड़ (350 एकड़ फीहोल्ड, 850 एकड़ लीजहोल्ड) भूमि है और न्यूज़प्रिंट तथा लेखन एवं मुद्रण कागज की इसकी उत्पादन क्षमता 100,000 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष है।

पुनरुद्धार और मिल विकास योजना (आरएमडीपी) के कार्यान्वयन के बाद कंपनी में अगस्त 2022 में वाणिज्यिक उत्पादन फिर से शुरू हुआ है। नेपा के पुनरुद्धार से घरेलू कागज उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान की आशा है।

11. हिंदुस्तान साल्ट्स लिमिटेड (एचएसएल)

- **स्थापना** : 1958 में जयपुर, राजस्थान में

- **श्रेणीः** अनुसूची 'सी' सीपीएसई
- **मुख्य व्यवसायः** नमक और संबंधित उत्पादों का उत्पादन और वितरण

एचएसएल खाराघोड़ा (गुजरात), मंडी (हिमाचल प्रदेश) और रामनगर (उत्तराखंड) मे कार्यरत है। एचएसएल के प्रमुख उत्पाद हैं- सामान्य नमक, रॉक साल्ट, औद्योगिक और खाद्य नमक, तरल ब्रोमीन एंव मैग्नीशियम क्लोराइड ($MgCl2$)।

एचएसएल पूरे भारत में उचित मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण नमक की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

12. सांभर साल्ट्स लिमिटेड (एसएसएल)

- **स्थापनाः** 1964 में जयपुर, राजस्थान में
- **श्रेणीः** हिंदुस्तान साल्ट्स लिमिटेड की सहायक कंपनी (अनुसूची 'सी' सीपीएसई)

- **मुख्य व्यवसायः** सांभर लेक वर्क्स में खाद्य और औद्योगिक नमक का उत्पादन
- **स्वामित्वः** एचएसएल (60%), राजस्थान सरकार (40%)

एसएसएल राजस्थान में सांभर झील का प्रबंधन करता है जो भारत की सबसे बड़ी नमक झीलों में से एक है। कंपनी अपनी उत्पादन दक्षता में सुधार, मूल्यवर्धित उत्पादों के विकास और सांभर झील की पर्यटन क्षमता के दोहन पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

13. राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड

- **स्थापनाः** 1981
- **श्रेणीः** मिनीरत्न श्रेणी - I अनुसूची 'सी' सीपीएसई

- **मुख्य व्यवसायः** दुग्ध परीक्षण उत्पाद
- **स्वामित्वः** भारत सरकार (51%), राजस्थान सरकार (49%)

आरईआईएल मुख्य रूप से ग्रामीण विकास के लिए तकनीकी समाधान तैयार करता है। आरईआईएल के प्रमुख उत्पाद और सेवाएं हैं- इलेक्ट्रॉनिक मिल्क टेस्टर (ईएमटी), सौर फोटोवोल्टिक मॉड्यूल/प्रणालियाँ, औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स, सुरक्षा निगरानी प्रणालियाँ एवं सूचना प्रौद्योगिकी समाधान।

हाल ही मे, कंपनी ने फेम योजना के तहत ईवी चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थापना और ग्रामीण क्षेत्रों में नवीकरणीय ऊर्जा के समाधान जैसे नए क्षेत्रों में कदम बढ़ाए है। भारत में आरईआईएल के कार्यों का ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण और नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है।

भारी उद्योग मंत्रालय की ये कंपनियाँ विभिन्न उद्योगों और सेवाओं का एक विविधतापूर्ण पोर्टफोलियो प्रस्तुत करती हैं जिसके दायरे में भारी इंजीनियरिंग और निर्माण से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स और नमक, चाय और कागज जैसी बुनियादी वस्तुएँ तक शामिल है। इनमें से कई उद्यम अपनी दक्षता और लाभप्रदता में सुधार करने के प्रयास कर रहे हैं।

ये कंपनियाँ सामूहिक रूप से भारत के औद्योगिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में देश की आत्मनिर्भरता में योगदान देती हैं, बुनियादी ढाँचे के विकास और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देती हैं। अनुमान है कि जैसे-जैसे भारत वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने की ओर अग्रसर होगा, ये कंपनियां भी खुद को बाजार की बदलती मांग और तकनीकी रुझानों के अनुरूप विकसित और अनुकूलित करती रहेंगी।

निदेशक (कॉर्पोरेट सेल)
भारी उद्योग मंत्रालय

भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी

अमरेन्द्र किशोर सिंह

परिचय

वैश्विक परिवहन परिदृश्य में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी महत्वपूर्ण होती जा रही है। भारत सरकार कार्बन उत्सर्जन और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए नीतिगत समर्थन और प्रोत्साहन दिया जा रहा है तथा बुनियादी ढांचे का विकास किया जा रहा है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में ऑटोमोबिल क्षेत्र का योगदान 7.1% का है। यह क्षेत्र लाखों नौकरियां प्रदान करता है। भारत की पंचामृत प्रतिबद्धताओं को 'विकसित भारत 2047' विज़न तथा सीओपी26 के अनुरूप रखते हुए यह क्षेत्र स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ रहा है जिसका लक्ष्य 2070 तक कार्बन उत्सर्जन से पूर्ण मुक्ति हासिल करना है।

6 सितंबर, 2024 तक की स्थिति के अनुसार, भारत में पिछले पांच वर्षों में लगभग 47.69 लाख इलेक्ट्रिक वाहन पंजीकृत हुए हैं जो 2020 [जब केवल 5.69 लाख इलेक्ट्रिक वाहन (वाहन डेटा के अनुसार) थे] के बाद से 70% की वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाता है। इस प्रकार भारत के इलेक्ट्रिक मोबिलिटी क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशन जनवरी, 2022 के 1,640 से बढ़कर 25,202 हो गए, जो बुनियादी ढांचे के प्रति बढ़ती सहायता को दर्शाती है।

सरकार की पहल और नीतियां: परिवर्तन की ओर

इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता को निम्नांकित नीतिगत उपायों से समझा जा सकता है :

सरकार की मांग–पक्ष पहल

1. **राष्ट्रीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन प्लान (एनईएमएमपी):**

   क) राष्ट्रीय ईंधन सुरक्षा बढ़ाने के लिये शुरू की गई यह स्कीम हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों के अंगीकरण को बढ़ावा देती है जिसका लक्ष्य 2030 तक इलेक्ट्रिक वाहनों की पैठ बढ़ाना है।

2. **फ़ेम (इलेक्ट्रिक वाहनों का तीव्र अंगीकरण और विनिर्माण) इंडिया स्कीम:**

   इसे विभिन्न चरणों में कार्यान्वित किया गया है और यह स्कीम इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद, चार्जिंग अवसंरचना विकास और इलेक्ट्रिक वाहन के पुर्जों के घरेलू निर्माण के लिए सहायता प्रदान करती है।

   क) फ़ेम-I को 2015 में कुल 895 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ शुरु किया गया था जिसका उद्देश्य स्वच्छ-ईंधन प्रौद्योगिकी वाले वाहनों को प्रोत्साहित करना था। इसके तहत कुल चार वर्षों के दौरान

2.8 मिलियन इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

ख) फेम-II की शुरुआत 2019 में 11,500 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ हुई थी। यह चरण इलेक्ट्रिक बसों, दुपहिया वाहनों और चार्जिंग बुनियादी ढांचे के विकास सहित सार्वजनिक परिवहन के विद्युतीकरण पर केंद्रित है। इस चरण में पांच वर्षों के दौरान लगभग 7,000 इलेक्ट्रिक बसों, 5 लाख इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहनों और 10 लाख इलेक्ट्रिक दुपहिया वाहनों के लिए सहायता प्रदान की गई है।

3. इलेक्ट्रिक वाहन संवर्धन स्कीम (ईएमपीएस) 2024:

कुल 778 करोड़ रुपये के संवर्धित बजट वाली छह महीने की अवधि की इस स्कीम का उद्देश्य 5,60,789 से अधिक इलेक्ट्रिक वाहन के लिए आर्थिक सहायता देना है जिनमें इलेक्ट्रिक दुपहिया और तिपहिया वाहन शामिल हैं।

4. पीएम ई-ड्राइव स्कीम:

केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा सितंबर, 2024 में अनुमोदित दो वर्षों की अवधि वाली इस स्कीम में सार्वजनिक परिवहन के विद्युतीकरण पर बल दिया जा रहा है जिनमें इलेक्ट्रिक बसें, दुपहिया वाहन, तिपहिया वाहन, इलेक्ट्रिक ट्रक, इलेक्ट्रिक एम्बुलेंस शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, चार्जिंग अवसंरचना और परीक्षण एजेंसियों के स्तरोन्नयन पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। ईएमपीएस पीएम ई-ड्राइव स्कीम का आंतरिक भाग है।

5. पीएम ई-बस सेवा (पीएसएम):

मंत्रिमंडल द्वारा सितंबर, 2024 में अनुमोदित इस स्कीम का परिव्यय 3,435.33 करोड़ रुपए है। इस स्कीम के तहत इलेक्ट्रिक बसों की तैनाती की तारीख़ से 12 वर्ष तक की अवधि के लिए प्रचालन सहायता प्रदान की जाएगी।

6. जीएसटी में कमी

जीएसटी परिषद की 36वीं बैठक में इलेक्ट्रिक वाहनों पर जीएसटी दर को 12% से घटाकर 5% और चार्जर या चार्ज स्टेशनों पर जीएसटी को 18% से घटाकर 5% कर दिया गया जिससे इलेक्ट्रिक वाहन बाजार को बढ़ावा मिलेगा।

आपूर्ति-पक्ष पहल

1. उत्पादन-सम्बद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) स्कीमें:

क) **उन्नत रसायन सेल (एसीसी) के लिए पीएलआई:** 18,100 करोड़ रुपए के बजट वाली पाँच वर्षों की इस स्कीम का उद्देश्य 50 गीगावॉट घंटा घरेलू बैटरी निर्माण

क्षमता स्थापित कर आयात पर निर्भरता को कम करना है। मंत्रालय ने 2022 में तीन कंपनियों को 30 गीगावॉट घंटा क्षमता आवंटित की है और वर्तमान में अतिरिक्त 10 गीगावॉट घंटा क्षमता का चयन किया जा रहा है।

ख) **ऑटोमोबिल और ऑटो घटकों के लिए पीएलआई (पीएलआई–ऑटो):** इसके तहत 25,938 करोड़ रुपये पाँच वर्षों के लिए आवंटित किए गए हैं। इस पहल से इलेक्ट्रिक वाहन और पुर्जों सहित उन्नत ऑटोमोटिव उत्पादों के लिए विनिर्माण क्षमता बढ़ेगी। भारी उद्योग मंत्रालय ने कंपोनेंट चैंपियन इंसेंटिव स्कीम के तहत 75 कंपनियों को और चैंपियन मूल उपकरण विनिर्माता आर्थिक प्रोत्साहन स्कीम के तहत 20 कंपनियों को मंजूरी दी है। इससे भारत में अनुमोदित मूल उपकरण विनिर्माताओं द्वारा 75,000 करोड़ रुपये का निवेश किए जाने की उम्मीद है।

2. **भारत में इलेक्ट्रिक यात्री कार विनिर्माण संवर्धन स्कीम:**

यह पहल वैश्विक इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं को 4,150 करोड़ रुपए के न्यूनतम निवेश के साथ भारत में उत्पादन स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिसका लक्ष्य पांच वर्षों के भीतर 50% घरेलू मूल्य संवर्धन प्राप्त करना है।

बाजार गतिकी और विकास

भारत का इलेक्ट्रिक वाहन बाजार, अभी भी अपने शुरुआती चरण में है, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक दुपहिया खंड में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है, जो शहरी गतिशीलता की जरूरतों को पूरा करता है। भारत, चौथा सबसे बड़ा यात्री वाहन निर्माता, 5वां सबसे बड़ा वाणिज्यिक वाहन निर्माता, दूसरा सबसे बड़ा दुपहिया निर्माता और वैश्विक स्तर पर तिपहिया वाहनों का सबसे बड़ा निर्माता है।

बुनियादी ढांचा विकास

भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए एक बड़ी चुनौती पर्याप्त चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की उपलब्धता की है। सरकारी सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन, जैसे- तेल विपणन कंपनियां (आईओसीएल, बीपीसीएल, एचपीसीएल आदि), एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड, राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड आदि देश भर में सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने में महत्वपूर्ण हैं। सरकार की पहल से निजी कंपनियों ने शहरी केंद्रों और राजमार्गों के किनारे चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना की है।

चुनौतियां और अवसर

महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, चुनौतियां बनी हुई हैं:

क) **उच्च प्रारंभिक लागत:** सब्सिडी के बावजूद इलेक्ट्रिक वाहन की अग्रिम लागत पारंपरिक वाहनों की तुलना में अधिक है जो बड़े पैमाने पर इसके अंगीकरण में बाधक है।

ख) **रेंज संबंधी चिंता:** चार्जिंग स्टेशनों के असमान वितरण के कारण रेंज संबंधी चिंता बढ़ती है और इसे अपनाने की दर धीमी होती है।

ग) **आपूर्ति श्रृंखला संबंधी सीमाएँ:** इलेक्ट्रिक वाहन घटकों, विशेष रूप से उन्नत बैटरियों के लिये एक मज़बूत घरेलू आपूर्ति श्रृंखला की कमी से आयात पर निर्भरता बढ़ती है।

घ) **इलेक्ट्रिक वाहन रखरखाव में कौशल संबंधी कमी:** ऑटोमोटिव क्षेत्र से जुड़ा कार्यबल फिलहाल इलेक्ट्रिक वाहनों की मरम्मत और रखरखाव से संबंधित जटिलताओं को पूरा करने के लिये पर्याप्त रूप से कुशल नहीं है।

वृद्धि के अवसर

क) **बैटरी प्रौद्योगिकी में प्रगति:** बैटरी भंडारण में नवाचार से लागत कम हो सकती है और रेंज संबंधी चिंता कम हो सकती है।

ख) **रोज़गार सृजन:** इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग से वर्ष 2030 तक लाखों रोज़गार सृजित होने का अनुमान है।

भावी दृष्टिकोण

भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी का भविष्य संभावनाओं से भरा प्रतीत होता है क्योंकि सरकार ने 2030 तक 30% इलेक्ट्रिक वाहन अंगीकरण का लक्ष्य रखा है। जलवायु संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह अंगीकरण आवश्यक है- विशेषकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए। 2023 में, इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग ने 3.6 बिलियन डॉलर जुटाए जो पिछले वर्ष की तुलना में 225% की वृद्धि को दर्शाता है। आर्थिक सर्वेक्षण-2023 के अनुसार, भारत का घरेलू इलेक्ट्रिक वाहन बाज़ार वर्ष 2022 से वर्ष 2030 तक 49% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ने का अनुमान है अर्थात् वर्ष 2030 तक 10 मिलियन की अनुमानित वार्षिक बिक्री होगी और 50 मिलियन रोज़गार सृजित करेगा।

निरंतर प्रयासों की बदौलत भारत का इलेक्ट्रिक मोबिलिटी क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनना तय है जिससे कार्बन उत्सर्जन कम होगा और संधारणीय विकास में भी योगदान हो सकेगा।

उप-सचिव
भारी उद्योग मंत्रालय

सीपीएसई की 'वार्षिक निष्पादन समीक्षा' बैठक

तापस डे

माननीय भारी उद्योग मंत्री श्री एच. डी. कुमारस्वामी की अध्यक्षता में 30 अगस्त, 2024 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्रक उद्यमों (सीपीएसई) की 'वार्षिक निष्पादन समीक्षा' बैठक आयोजित की गई।

इस बैठक में केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों (सीएमडी) तथा निदेशक मंडलों (स्वतंत्र निदेशकों सहित) ने भाग लिया।

बैठक के दौरान, सभी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों ने वित्त वर्ष 2023-24 और 2024-25 की पहली तिमाही (यानी अप्रैल से जून) के लिए अपने सीपीएसई के कामकाज और आर्थिक निष्पादन की जानकारी दी।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों ने अपने सीपीएसई के लिए दक्षता में सुधार, लाभ में वृद्धि, व्यापार विस्तार, आधुनिकीकरण और आगे की राह के लिए महत्वपूर्ण पहलो के बारे में भी जानकारी दी।

परामर्शदाता
कॉर्पोरेट सेल, भारी उद्योग मंत्रालय

10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

इन्द्र जीत सिंह

10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह के लिए भारी उद्योग मंत्रालय ने 21 जून, 2024 को बीएचईएल, नोएडा परिसर में योग कार्यक्रम का आयोजन किया। माननीय मंत्री श्री एच.डी. कुमारस्वामी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और इसमें मंत्रालय से सचिव तथा संयुक्त सचिव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर माननीय मंत्रीजी ने कहा, ''योग दुनिया को भारत का अनमोल उपहार है, जो सद्भाव और संतुलन के सिद्धांतों के माध्यम से लोगों और संस्कृतियों को एक साथ लाता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत की संस्कृति और विरासत को गर्व से प्रदर्शित करते हुए, विश्व स्तर पर योग को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया है।'' उन्होंने कहा, ''योग का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है और यह मानसिक और शारीरिक संतुलन बनाए रखने में आवश्यक रहा है। योग का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है जो भारतीय संस्कृति में इसकी गहरी जड़ों को दर्शाता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एक सच्चे योगी हैं जिनके जीवन में योग का सार समाहित है। उनका समर्पण और जुनून आज के युवाओं को प्रेरित करता है और योग की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रदर्शित करता है।''

अवर सचिव
भारी उद्योग मंत्रालय

स्वच्छता ही सेवा अभियान

भरत कुमार

भारी उद्योग मंत्रालय और इसके सीपीएसई और स्वायत्त निकायों ने 16-31 अगस्त, 2024 के बीच उत्साहपूर्वक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया। इसमें मंत्रालय में उच्चाधिकारियों के नेतृत्व में सभी कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की तथा अपने परिवेश को साफ-सुथरा बनाए रखने में योगदान दिया। इस अवधि के दौरान स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाए रखने के महत्त्व पर जोर देते हुए कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। उच्चाधिकारियों ने मंत्रालय में उपस्थित सभी कर्मियों को स्वच्छता को ''एक दैनिक अभ्यास'' के रूप में अपनाने के लिए भी प्रेरित किया।

मंत्रालय में 'स्वच्छता शपथ' कार्यक्रम

मंत्रालय के सीपीएसई में स्वच्छता ही सेवा' की शपथ

भारी उद्योग मंत्रालय, इसके सीपीएसई और स्वायत्त निकायों के कार्यस्थलों और उनके आसपास की साफ-सफाई तथा स्वच्छता बनाए रखने के लिए सफाई अभियान जारी है। दिसंबर, 2023 से अगस्त, 2024 के दौरान कुल 757 कार्यक्रम आयोजित किए

गए जिनमे 2982 फाइलों तथा अन्य प्रकार के कबाड़ों का निपटान किया गया। इससे 19.07 लाख वर्गफीट जगह कार्यालयों के अन्य उपयोगी कार्यों के लिए खाली हुई और इन कबाड़ों के निपटान से 69. 37 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया गया। ऐसे आयोजनों से कार्यस्थल का अनुभव, स्थान-प्रबंधन और कामकाजी वातावरण तो बेहतर हुआ ही, राजस्व भी अर्जित हुआ।

मंत्रालय के अधीनस्थ विभिन्न सीपीएसई में 'स्वच्छता अभियान'

यह विशेष उल्लेखनीय है कि 02 अक्तूबर से 31 अक्तूबर, 2023 के दौरान मंत्रालय में स्वच्छता संबंधी विशेष अभियान 3.0 चलाया गया जिसमें मंत्रालय ने कबाड़ निपटान से 21 लाख वर्गफीट खाली कराई। इस उपलब्धि के लिए मंत्रालय को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, इन कबाड़ों की बिक्री से मंत्रालय ने 4.66 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया और इस मामले में मंत्रालय ने 5वां स्थान प्राप्त किया।

श्रमिकों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

अनुभाग अधिकारी
भारी उद्योग मंत्रालय

एक पेड़ माँ के नाम अभियान

रोहताश सिंह मीना

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक पेड़ माँ के नाम (#Plant4Mother) नामक वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की गई। इस अवसर पर माननीय भारी उद्योग मंत्री श्री एच. डी. कुमारस्वामी, माननीय राज्यमंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा, मंत्रालय में सचिव श्री कामरान रिजवी और अपर सचिव डॉ. हनीफ कुरैशी ने उद्योग भवन में वृक्षारोपण किया। अब तक भारी उद्योग मंत्रालय और इसके सीपीएसई और स्वायत्त निकाय 97 हजार से अधिक पेड़ लगा चुके हैं। यह अभियान 31 मार्च, 2025 तक जारी रहेगा।

अभियान की शुरुआत करते हुए माननीय भारी उद्योग राज्यमंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा, सचिव श्री कामरान रिजवी, अपर सचिव डॉ. हनीफ कुरैशी तथा अन्य अधिकारी

माननीय भारी उद्योग मंत्री श्री एच.डी. कुमारस्वामी द्वारा पौधरोपण

माननीय भारी उद्योग राज्यमंत्री,
श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा द्वारा पौधरोपण

सचिव श्री कामरान रिजवी द्वारा पौधरोपण

अपर सचिव, डॉ. हनीफ कुरैशी द्वारा पौधरोपण

मंत्रालय के अधीनस्थ सीपीएसई की इकाईयों में पौधरोपण

अवर सचिव
भारी उद्योग मंत्रालय

कृष्ण आज भी उपादेय हैं

डॉ. अलका शर्मा

श्रीमद्भागवत गीता का भारत वर्ष की समृद्ध शास्त्र परम्परा में विशिष्ट स्थान है क्योंकि गीता धर्म व अध्यात्म का महान ग्रंथ होने के साथ-साथ सर्वकालिक व सार्वभौमिक ग्रंथ भी माना जाता है। इसकी शिक्षाएं कालातीत और समयातीत हैं और सदा अक्षुण्ण रहने वाली हैं। गीता रूपी गंगोत्री में स्नान कर अज्ञानी भी सद्ज्ञान प्राप्त कर लेता है, पापी भी पाप-ताप से मुक्त होकर भवसागर पार कर जाता है। गीता मातृवत् अपने पाठकों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए मानसिक शांति प्रदान करती है और नर से नारायण बनने का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रीकृष्ण की देशना होने के कारण यह ज्ञान के अद्भुत प्रकाश से आलोकित है। सभी शास्त्रों का ज्ञान इसमें समाहित होने के कारण इसे गीतोपनिषद् भी कहा जाता है।

महाभारत युद्ध के समय मोहग्रस्त अर्जुन को श्री कृष्ण ने जो उपदेश दिए, वे आज भी हर व्यक्ति के मन के संशय और समस्या का समाधान करने में सक्षम हैं।

गीता भारतीय संस्कृति की आधारशिला और हिन्दू संस्कृति का वाहक ग्रंथ है। इसके 18 अधयायों में 700 श्लोक हैं जिसने जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण पहलू को छुआ है। इनमें आत्मा के अजर-अमर होने, स्वार्थत्याग, मन को स्थिर करने, क्रोध पर नियंत्रण, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान के लिए अहंकार के परित्याग आदि का दर्शन हर उम्र के लोगो के लिए परम उपयोगी है। यही कारण है कि गीता युगों से जन-जन का पथ-प्रदर्शक रही है और यह आज भी प्रासंगिक है। इसे थोड़ा विस्तार से समझें-

निष्काम कर्म की प्रेरणा

श्रीकृष्ण निष्काम कर्म की प्रेरणा देते हैं। आज हर व्यक्ति स्वार्थ और धनलोलुपता में फंसा है और केवल वही काम करता है जिसमे उसका लाभ हो। किसी से कोई भी काम करने को कहिए, तुरंत पूछता है-इससे मुझे क्या मिलेगा? यही भावना समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार की जड़ है।

गीता निष्काम कर्म की बात करती है। यह सन्देश देती है कि फल की चिंता किये बिना आप केवल अपना कर्म पूर्ण निष्ठा से करें, कर्म के अनुसार आपको फल अवश्य मिलेगा क्योंकि आपके लिए ईश्वर की योजना आपकी इच्छाओं से बेहतर होती है।

जीवन मे समत्व भाव

गीता में सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, उत्कर्ष-अपकर्ष सभी परिस्थितियों में समभाव से रहने की प्रेरणा है। सुख-दुःख जैसी परिस्थितियों में मानव आजन्म फंसा रहता है। यह कहती है कि हम सुख आने पर ज्यादा प्रफुल्लित न हों और न ही दुःख आने पर दुखी हों। इसकी अपेक्षा धैर्यपूर्वक चिंतन करें कि सुख-दुख का क्रम चलता ही रहता है।

प्रत्येक परिस्थिति में धैर्य के साथ समभाव बनाये रखने वाला ही सुखी व ज्ञानी होता है। सुख आने पर कभी कोई यह नही सोचता कि परमात्मा ने इतने सुख के लिए केवल मेरा ही चयन क्यों किया। तो फिर, थोड़ा-सा दु:ख आने पर क्रंदन क्यों? दु:ख आने पर विचलित हुए बिना अपनी प्रसन्नता दुख में भी बनाये रहना ही समत्व कहा जाता है। आज जब हर व्यक्ति किसी न किसी कारण से दु:खी है, ऐसे में हर दुखी मन के लिए यह उपदेश शीतलकारी है।

कर्मफल का सिद्धांत

गीता का सबसे महत्वपूर्ण कर्म फल का सिद्धांत आज भी लोगो को यही संदेश देता है कि व्यक्ति को अपने कर्म का फल अवश्य भुगतना पड़ता है। आपने भी जगह-जगह लिखा देखा होगा-"आप कैमरे की निगरानी में हैं।" आपके उचित-अनुचित कार्य पर भी प्रभु की नज़र प्रतिपल बनी हुई है।

अपने किए का फल हमें भुगतना ही होगा, यदि सबको यह ज्ञान हो जाये, तो लोग गलत काम ही न करें। यदि युवा पीढ़ी को भी गीता का अनुशीलन कराया जाए, तो वह कभी कुमार्ग पर नही जाएगी।

क्रोधशमन

गीता क्रोध के नियंत्रण पर जोर देती है- क्रोधात भवति सम्मोह सम्मोहात स्मृति विभ्रम अर्थात् व्यक्ति के पतन का मूल कारण क्रोध ही है। व्यक्ति को सुखी जीवन के लिए इन्द्रिय निग्रह, मन को वश में करना परम आवश्यक है।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि क्रोध सभी दु:खों का मूल है और उत्तम शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य तथा पारिवारिक शान्ति के लिए सर्वथा त्याज्य है। अब तो डॉक्टर भी स्वीकारते हैं कि बी.पी., शुगर, हाइपरटेंशन, अनिद्रा आदि का मूल कारण क्रोध ही है। दूसरी तरफ, एक छोटी-सी मुस्कान बड़े से बड़ा काम आसान कर देती है जबकि क्रोध पतन की ओर ले जाता है। अहंकार का त्याग तथा सभी प्राणियों के प्रति मैत्री और करुणा का भाव ही सन्मार्ग है।

समाज का चारित्रिक उत्थान

आजकल समाचार-पत्रों और टेलीविजन पर महिलाओं, छोटी बालिकाओं के प्रति बढ़ते अपराध को देख-सुनकर मन व्यथित हो जाता है। श्रीकृष्ण कहते हैं- ध्यायतो विषयान्पुंस: संगस्तेषूपजायते, संगात्संजायते काम: कामातक्रोधो

भिजायते। अर्थात् लगातार विषयो का चिंतन न करें। समाज को अपराधमुक्त करने और आदर्श समाज बनाने के लिए यह संदेश जितना उस समय कारगर था, कुत्सित मानसिकता को बदलने के लिए वर्तमान में भी उतना ही प्रासंगिक है। वस्तुतः, हमे अपने जीवन-मूल्यों को फिर से अपनाना होगा- शक्नोतीहैव यः सोढुम प्राकशरीर विमोक्षणात, कामक्रोधोउद्भाव वेगं स युक्तः सः सुखी नरः।

हमें नई पीढ़ी को भी प्रेरित करना होगा। जिस प्रकार गाड़ी चलाते वक्त समय-समय पर ब्रेक का प्रयोग करके ही गंतव्य तक पहुँचा जाता है, वैसे ही अनावश्यक विषयों में लिप्त अपने मन और इंद्रियों को नियंत्रित करके ही जीवन-यात्रा पूर्ण करनी चाहिए। युवा पीढ़ी इसका अनुसरण कर अपना लक्ष्य सरलता से प्राप्त कर सकती है क्योंकि मन की चंचलता उनके लक्ष्य के बीच आने वाली सबसे बड़ी बाधा है।

आत्मा विषयक ज्ञान

गीता कहती है कि जीवन परिवर्तनशील है और यह देह क्षणभंगुर है लेकिन हमारी आत्मा अजर-अमर है। यह ज्ञान आज भी परिजनों की मौत से आहत लोगों को संबल प्रदान करता है कि फिर किसी न किसी जन्म में अवश्य मिलना होगा। कृष्ण का यह उपदेश पुनर्नवा का काम करता है और शरीर को नई ऊर्जा प्रदान करता है।

विश्वशांति में सहायक

ईश्वर घट-घट मे वास करता है। यदि विश्व समुदाय गीता के इस संदेश को आत्मसात् कर ले, तो विश्वयुद्ध की नौबत ही न आए। आज दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में जो संघर्ष दिखाई देता है, कृष्ण का उपदेश ही उनसे मुक्ति का उपाय है। परमाणु युद्ध की विभीषिका से यदि मानवजाति को बचाना है, तो गीता की शरणागति लेनी ही होगी। वस्तुतः, युगों-युगों से मानव जाति श्रीकृष्ण के उपदेशों से लाभान्वित होती रही है और भविष्य में भी होती रहेगी।

संपादक अध्यात्म संदेश पत्रिका
सह-संपादक योग संस्कृति
उत्थान पीठ पत्रिका (वेलनेस केयर)

बाधाओं के बीच बढ़ती हिंदी

संदीप ठाकरे

हिंदी हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति, स्वाभिमान की प्रतीक और गर्व की भाषा है। यह भाषा हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाती है, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और विरासत का प्रतिबिंब है। भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है, जो हमारी राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान और समर्पण का प्रतीक है।

हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जो अपनी प्राचीनता, समृद्धि और सरलता के लिए जानी जाती है। यह भाषा हमारे राष्ट्र की भाषा होने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतीक है। हिंदी दुनियाभर में हमें सम्मान दिलाती है और हमारी पहचान को मजबूत बनाती है। हिंदी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है, जो इसकी महत्ता और प्रभाव को दर्शाती है। यह भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, जो हमारे विचारों को अभिव्यक्त करती है, हमारी भावनाओं को प्रकट करती है और हमारी संस्कृति को संरक्षित करती है।

हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा है, जो हमारी संस्कृति और संस्कारों की संवाहक है। यह भाषा हमारे देश की एकता को बढ़ावा देती है और हमारे व्यक्तित्व विकास में सहायक है। हिंदी भाषा का महत्व केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्वभर में है। हिंदी हमारी पहचान है, हमारी संस्कृति है और हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। हिंदी भाषा की गरिमा और महत्व को समझने के लिए हमें इसके इतिहास, साहित्य, और सांस्कृतिक महत्व को जानना होगा। हिंदी भाषा के विकास काल, इसके साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान और इसके वैश्विक प्रभाव को समझने से हमें इसके महत्व को समझने में मदद मिलेगी।

राष्ट्र निर्माण में हिंदी

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा है कि 'मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की' और यह सत्य भी है कि भाषा केवल संवाद की ही नहीं अपितु संस्कृति एवं संस्कारों की भी संवाहिका है। भारत एक बहुभाषी देश है। सभी भारतीय भाषाएँ समान रूप से हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक अस्मिता की अभिव्यक्ति करती हैं। बहुभाषी होना एक गुण है किंतु मातृभाषा में शिक्षण वैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। मातृभाषा में शिक्षित विद्यार्थी अन्य भाषाओं को भी सहज रूप से ग्रहण कर सकता है। प्रारंभिक शिक्षण किसी विदेशी भाषा में करने पर जहाँ व्यक्ति अपने परिवेश, परंपरा, संस्कृति व जीवन मूल्यों से कटता है वहीं पूर्वजों से प्राप्त होने वाले ज्ञान, साहित्य आदि से अनभिज्ञ रह जाने से अपनी पहचान खो देता है। हम सारी भाषाओं का स्वागत करते हैं। भाषा किसी भी देश की सभ्यता की संवाहक होती है। राष्ट्र निर्माण में

भाषा की क्या भूमिका हो सकती है, वह हमें चीन, कोरिया, जापान, इजराइल जैसे देशों से बखूबी सीखना चाहिए।

भारत के कई ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों ने अपनी शिक्षा मातृभाषा में ही प्राप्त की है। महामना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर, बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे मूर्धन्य चिंतकों से लेकर चंद्रशेखर वेंकट रामन, प्रफुल्ल चंद्र राय, जगदीश चंद्र बसु जैसे वैज्ञानिकों, कई प्रमुख शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों ने मातृभाषा में शिक्षण को ही नैसर्गिक एवं वैज्ञानिक बताया है। शिक्षा आयोगों एवं देश के महापुरूषों ने भी मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने के सुझाव दिये हैं। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा है:-'बच्चों के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है, जितना शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध'। हिंदी भाषा मां के समान है। हिंदी अन्य भाषाओं को अपने में समाहित कर लेती है। हिंदी में प्रशासनिक निपुणता है। उदारता तथा आत्मीयता के स्तर पर हिंदी श्रेष्ठ भाषाओं में से एक है। जब हम अपनी भाषा में लिखते-पढ़ते है, तो हमें आत्मीय आनंद की अनुभूति होती है।

ज्ञान-विज्ञान, सृजन और अनुसंधान की भाषा

विश्व में विगत 40 वर्षों में कई अध्ययनों के निष्कर्ष हैं कि मातृभाषा में ही शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। भारतीय वैज्ञानिक सी.वी.श्रीनाथ शास्त्री के अनुभव के अनुसार भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़े छात्र, अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं। राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र की डॉ. नन्दिनी सिंह के अध्ययन (अनुसंधान) के अनुसार, अंग्रेजी की पढ़ाई से मस्तिष्क का एक ही हिस्सा सक्रिय होता है, जबकि हिंदी की पढ़ाई से मस्तिष्क के दोनों भाग सक्रिय होते हैं। सर आइजैक पिटमैन ने कहा है कि संसार में यदि कोई सर्वांग पूर्ण लिपि है तो वह देवनागरी है। गूगल के अनुसार हिंदी दुनिया की ऐसी भाषा है जिसमें सर्वाधिक कंटेंट (पाठ्य सामग्री) का निर्माण होता है। हिंदी सभी भाषाओं की बड़ी बहन है इसका यह अर्थ नहीं है कि हम दूसरी भाषाओं को लघुतर मानें। संस्कृत मातृभाषा है और सभी भ्रातृभाषाएं हैं। संख्यात्मक रूप से सबसे ज्यादा लोग हिंदी जानते हैं, बोलते हैं। संस्कृति के सबसे निकट भी हिंदी ही है।

उद्योग-व्यवसाय और स्वावलंबन में हिंदी

1. **संचार:** हिंदी भारत में व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है और अधिकांश लोग हिंदी समझते हैं। प्रभावी संचार उद्योगों में महत्वपूर्ण है और हिंदी संदेश, निर्देश, और सुरक्षा प्रोटोकॉल को संप्रेषित करने में मदद करती है जिससे कार्यस्थल पर सुरक्षा और दक्षता बढ़ती है।

2. **प्रशिक्षण और विकास:** प्रशिक्षण मैनुअल, गाइड, और निर्देशात्मक सामग्री आसानी से हिंदी में बनाई जा सकती है, जिससे कौशल विकास और ज्ञान साझा करने में मदद मिलती है और कर्मचारियों को अपने कार्यों में अधिक प्रभावी ढंग से काम करने में मदद मिलती है।

3. **सुरक्षा और आपातकाल:** आपातकालीन स्थितियों में, हिंदी का उपयोग महत्वपूर्ण जानकारी को तेजी से प्रसारित करने के लिए किया जा सकता है, जिससे त्वरित कार्रवाई और जोखिम कम होता है और कार्यस्थल पर सुरक्षा बढ़ती है।

4. **ग्राहक सेवा:** हिंदी उद्योगों को व्यापक ग्राहक आधार से जुड़ने में मदद करती है, जिससे बेहतर सेवा और समर्थन प्रदान किया जा सकता है और ग्राहक संतुष्टि बढ़ती है।

5. **प्रलेखन और रिपोर्टिंग:** हिंदी का उपयोग प्रलेखन, रिपोर्टिंग, और रिकॉर्ड-कीपिंग के लिए किया जा सकता है, जिससे डेटा को प्रबंधित और विश्लेषित करना आसान होता है और निर्णय लेने में मदद मिलती है।

6. **ब्रांडिंग और मार्केटिंग:** हिंदी का उपयोग ब्रांडिंग, मार्केटिंग और विज्ञापन में किया जा सकता है, जिससे उद्योगों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने में मदद मिलती है और ब्रांड की पहचान बढ़ती है।

7. **सरकारी अनुपालन:** हिंदी एक आधिकारिक भाषा है और इसका उपयोग उद्योगों में सरकारी नियमों और आवश्यकताओं का पालन करने में मदद करता है, जिससे कानूनी जोखिम कम होता है।

8. **कर्मचारी जुड़ाव:** हिंदी का उपयोग कर्मचारियों को जोड़ने, कंपनी समाचार साझा करने और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देने में किया जा सकता है, जिससे कर्मचारी संतुष्टि और उत्पादकता बढ़ती है।

9. **गुणवत्ता नियंत्रण:** हिंदी का उपयोग गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल बनाने में किया जा सकता है, जिससे स्थिरता और उच्च मानक सुनिश्चित होते हैं और ग्राहकों को बेहतर उत्पाद और सेवाएं प्रदान की जा सकती हैं।

इंटरनेट और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी

इंटरनेट पर हिंदी का विस्तार हो रहा है, इसमें कोई दो राय नहीं है। इंटरनेट पर हिंदी में काम करने वाले लोगो की संख्या लगातार बढ़ रही है। वहां हिंदी में रचने-लिखने वालों से लेकर कंपनियों में हिंदी के एप्लीकेशंस तक बढ़ रहे हैं। हिंदी में खूब सारी वेबसाइट्स आ रही हैं और इन साइटों को लोग बड़ी संख्या में पढ़ भी रहे हैं। एक तथ्य यह है कि हिंदी इंटरनेट पर तेजी से बढ़ने वाली भाषा भी है।

- इंटरनेट पर पहले अंग्रेजी में ही कंटेंट उपलब्ध थे। भारत में बड़ी आबादी हिंदी जानती-समझती है। टेक कंपनियों ने अपने लिए इसमें एक बड़ा बाजार तलाशा और हिंदी में कंटेंट की शुरुआत की।
- पिछले पांच वर्षों के दौरान इंटरनेट पर हिंदी सामग्री में बेहद तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है।
- स्मार्टफोन के मौजूदा दौर में लोगों के लिए हिंदी में ढेरों कंटेंट उपलब्ध है।
- अनेक कंपनियां स्मार्टफोन में अब इनबिल्ट हिंदी की सुविधा मुहैया करा रही हैं। इससे कोई भी व्यक्ति इंटरनेट पर अपनी जरूरत की चीजों को खंगाल सकता है और जान-समझ सकता है।
- जिन लेखकों की रचना कोई प्रकाशक छापने को तैयार नहीं होते, वे उसे अब अपनी भाषा में इंटरनेट पर डाल सकते हैं।
- मौजूदा तकनीकी युग में तकनीक को समझे बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। यदि इंटरनेट पर हिंदी पिछड़ेगी, तो देश-दुनिया में यह पिछड़ती जाएगी। आज हिंदी की अनेक किताबें इंटरनेट पर पीडीएफ या दूसरे प्रारूपों में मौजूद हैं।

- इंटरनेट पर ब्लॉग का विकास होने के बाद अनेक लोगों ने अपनी बात रखने के लिए इस प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया। इंटरनेट पर आसानी से देवनागरी लिपि लिखने वाले टूल्स विकसित होने के बाद वे लोग भी अब अपने विचार हिंदी में रख रहे हैं, जो हिंदी टाइपिंग नहीं जानते थे क्योंकि विविध टूल्स के जरिये अब आप बिना हिंदी टाइपिंग जाने हिंदी में लिख सकते हैं।
- फेसबुक और व्हॉट्सएप जैसे सोशल मीडिया मंचों पर आज धड़ल्ले से लोग हिंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इन मंचों पर अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी के कंटेंट की संख्या बढ़ती जा रही है।

उपसंहार

आज, हिंदी विश्व में मंदारिन 'चीनी भाषा' के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत और विदेशों में करीब 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं तथा इस भाषा को समझने वाले लोगों की संख्या करीब 90 करोड़ है। यह आंकड़ा हिंदी की लोकप्रियता और इसके प्रसार को दर्शाता है। हिंदी का वर्चस्व सिर्फ भारत में ही नहीं है, बल्कि नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, युगांडा, दक्षिण अफ्रीका, कैरिबियन देशों, ट्रिनिडाड एवं टोबेगो और कनाडा जैसे देशों में भी इसके बोलने वालों की अच्छी खासी संख्या है।

पिछले कुछ समय से यूनिकोड फोंट की उपलब्धता के कारण हिंदी में चैट, गप-शप, ई-मेल, ई-शिक्षण, मल्टीमीडिया की सुलभता से जन जन में हिंदी की लोकप्रियता बढ़ी है। बढ़ती जनसंख्या के कारण पूरी दुनिया भारत के बाजार पर नजरें टिकाए हुए है। भारत में बेरोजगारी बढ़ रही है, इस पर लगाम लगाने के लिए मातृभाषा में रोजगार के उभरते नवीन अवसरों में कौशल पर ध्यान देना अति आवश्यक हैं क्योंकि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में जो भी समझ सकता हैं और याद रख सकता है वह किसी अन्य भाषा में करना असहज होता है।

असंख्य बाधाओं और संकटों के बीच हमारी मातृभाषा हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा हैं। यह प्रत्येक देशवासी के लिए संतोष और आत्मगौरव का विषय हैं। आइए, हम अपनी संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान की भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

प्रत्येक देशवासी को संकल्पबद्ध होना होगा कि वह भारत के समुचित विकास, राष्ट्रीय एकात्मता एवं गौरव को बढ़ाने हेतु शिक्षण, दैनंदिन कार्य तथा लोक-व्यवहार में मातृभाषा को प्रतिष्ठित करने हेतु प्रभावी भूमिका निभाएगें। परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। अभिभावक अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा अपनी ही भाषा में देने के प्रति दृढ़ निश्चयी बनें। हम सबके छोटे-छोटे प्रयासों से ही यह कार्य संभव हो पाएगा।

जन संपर्क अधिकारी
नेपा लिमिटेड, नेपानगर (म.प्र.)

नारी तू ही नारायणी

सचिन शर्मा

पुरुष जीवन में नारी ''बाती की लौ और दीपक का तेल'' के समतुल्य है। पुरुष के जीवन में आभा की लौ तब तक विराजमान है, जब तक नारी शक्ति रूपी तेल मौजूद है। नारी खुद को जला कर खुद को मिटा कर पुरुष के जीवन को अधिक ताप सहने वाला बना देती है। इसलिए यह आवश्यक है कि पुरुषों को नारी के आत्म-सम्मान का सत्कार करना चाहिए। सही मायने में देखा जाए तो महिला सशक्तिकरण का अर्थ ही *महिला को आत्म-सम्मान देना और आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि वो अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकें।*

सामाजिक उत्थान का आधार-स्तंभ है नारी-शिक्षा और शिक्षित व्यक्ति ही अपनी समानता और स्वतंत्रता के साथ-साथ अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर इस्तेमाल कर सकता है। भारत में इस दिशा में विगत वर्षो में उल्लेखनीय प्रयास हुए हैं ताकि महिलाएं और बालिकाएं अपने बुनियादी अधिकारों, आजादी और सम्मान का लाभ उठा सकें।

महिलाएँ हर क्षेत्र में कुशल सहयोगी साबित हुई हैं। सार्वजनिक जीवन में महिलाओं के लिए एक बड़ी चुनौती यह है कि उनका आकलन पुरुषों की अपेक्षा अलग तरीकों से किया जाता है। यह मानसिकता धीरे-धीरे बदल रही है।

एक और मुद्दा जो हम अक्सर देखते हैं, वह है आत्मविश्वास का। उदाहरण के तौर पर यदि आप बराबर के कौशल वाले किसी पुरुष और महिला से सवाल करें कि "क्या आप कोई काम कर सकते है?" तो पुरुष का जवाब होगा, "बिल्कुल! मैं इसे कर लूंगा"।

लेकिन ज्यादातर महिलाएं कहेंगी, "मैं इसे कर सकती हूँ लेकिन मुझे पहले कई चीजें सीखनी होगी।" अध्ययन के अनुसार, पुरुष अवसरों को अपनी भविष्य की क्षमता के हिसाब से आंकते हैं, जबकि महिलाएं इस हिसाब से कि उन्होंने पूर्व में क्या उपलब्धियां अर्जित की हैं। किन्तु अब महिलाएँ नेतृत्वकारी भूमिकाओं में दिख रही हैं।

शक्त वही है जो स्वयं के लिए क्या सही है, क्या गलत है का निर्णय स्वयं कर सके और अपने निर्णय को अपने जीवन में कार्य रूप में परिणत कर सके। व्यक्ति की स्वतंत्रता उसके अधिकार और समाज के विकास के साथ ही विकसित होती है।

सामाजिक बदलाव इतनी सुगमता से नहीं होते। हम अपने कपड़े और भाषा सुगमता से बदल पाते हैं, परंतु मानसिक बदलाव धीमी गति से होने वाली प्रक्रिया है। यह एक जटिल स्थिति है और नारी सशक्तिकरण भी एक सतत मानसिक प्रक्रिया है।

समानता का कानूनी अधिकार तो नारी को है, पर इस संवैधानिक अधिकार के साथ अभी हमारी सामाजिक परम्पराएं और मूल्य मेल नहीं खाते। हरेक बदलाव सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

यदि पुरूष समाज स्त्री सशक्तिकरण में सहायक होता है, तो स्त्रियाँ शीघ्र ही अपनी उपस्थिति से समाज को अभिभूत कर सकते में सक्षम होंगी।

उप-प्रबंधक
सीमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

विकसित भारत में भारी उद्योग

विशाल

भारत समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और विविधता वाला देश है। आधुनिक भारत के विकास में भारी उद्योगों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी उन्नति का भी एक प्रमुख आधार है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत ने एक औद्योगिक राष्ट्र के रूप में उभरने का सपना देखा और इसे साकार करने में भारी उद्योगों की भूमिका को केंद्रीय माना गया। भारत सरकार ने आर्थिक आत्मनिर्भरता और औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए भारी उद्योगों के विकास पर जोर दिया। इस दिशा में सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों की स्थापना की गई, जैसे निर्माण, इस्पात संयंत्र, शिपबिल्डिंग, सीमेंट, पेट्रोकेमिकल्स, भारी मशीनरी निर्माण इकाइयाँ और उर्जा उत्पादन संयंत्र आदि।

सरकारी नीतियाँ और पहल

1 **प्रौद्योगिकी विकास :** भारी उद्योग तकनीकी उन्नति के प्रमुख प्रेरक होते हैं। इन उद्योगों में तकनीकी विकास से उत्पादन की दक्षता बढ़ती है, लागत मे कमी आती है और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होता है। सरकार ने प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न योजनाएँ शुरू की है, जैसे- ''स्टार्टअप इंडिया'' और ''डिजिटल इंडिया''। भारी उद्योगों में नवाचारों के अंगीकरण को भी प्रोत्साहित किया जाता है।

2. **नीति और योजनाएं :** ''मेक इन इंडिया'' जैसी पहल भारी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से लाई है। ''आत्मनिर्भर भारत'' और ''डिजिटल इंडिया'' जैसी योजनाओं का उदेश्य विदेशी निवेश को बढ़ावा देना, घरेलू उत्पादन को बढ़ाना और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति को मजबूत करना है।

अर्थव्यवस्था और भारी उद्योग

1. **औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि :** सड़कों, पुलों, रेलवे, बंदरगाहों और हवाई अड्डों का निर्माण भारी उद्योगों की तकनीकी विशेषज्ञता और उत्पादों के माध्यम से हो पाया है। इस्पात, सीमेंट, और पेट्रोकेमिकल्स जैसी उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है जो देश की निर्माण और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिनसे देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि हो रही है।

2. **रोजगार सृजन :** भारी उद्योगों में बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इससे रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और देश की बेरोजगारी दर को कम करने में मदद मिलती है। ये उद्योग स्थानीय स्तर पर भी रोजगार सृजन में सहायक होते हैं, जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

संभावनाएँ और चुनौतियाँ

1. **हरित उद्योग और विकास :** भविष्य में भारी उद्योगों को हरित उद्योगों में परिवर्तित करने की आवश्यकता होगी, ताकि पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। इसके लिए स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का उपयोग, प्रदूषण नियंत्रण तकनीकियों का विकास, और पुनःचक्रण (रीसाइक्लिंग) को बढ़ावा देना आवश्यक होगा। साथ ही यह भी सुनिश्चित करेगा कि भारत का औद्योगिक विकास सतत और पर्यावरण के अनुकूल हो।

2. **प्रौद्योगिक उन्नति :** भविष्य में, भारी उद्योगों के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार अत्यधिक महत्वपूर्ण होंगे। तकनीकी उन्नति और स्वचालन भविष्य के भारी उद्योगों की दिशा निर्धारित करेंगे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी नवीन तकनीकियों का उपयोग उद्योगों की दक्षता बढ़ाने, लागत कम करने, गुणवत्ता बढ़ाने और उत्पादन क्षमता बढ़ाने तथा उन्हें और अधिक सक्षम और प्रतिस्पर्धी बनाने में उपयोगी होंगे।

3. **स्थानीय और वैश्विक चुनौतियाँ :** भारी उद्योगों के समक्ष स्थानीय और वैश्विक चुनौतियाँ होंगी, जैसे कच्चे-माल की उपलब्धता, लागत में वृद्धि और वैश्विक व्यापार नीतियों में परिवर्तन। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारी उद्योगों को लगातार नवाचार करना होगा, लागत नियंत्रित रखना होगा और गुणवत्ता सुधार करना होगा।

भारी उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक तकनीक और नवाचार ने इस उद्योग को और अधिक उन्नत बना दिया है, जिससे यह भारतीय और वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बना रहा है। भारी उद्योग देश के आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, बुनियादी ढांचे के निर्माण और तकनीकी उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकार की नीतियों और उद्योग के समर्थन से भारी उद्योग भविष्य में न केवल भारत के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे बल्कि भारत और भी अधिक सशक्त होगा। भारी उद्योग भारत को एक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने में योगदान देगा।

प्रबंधक
ब्रिज एण्ड रूफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

मन की बात

राहुल आनंद

इंसान एकांत में अपने जीवन के हर अच्छे-बुरे पल का आकलन करता है। 'अकेलापन' वास्तव में वो पल होता है, जिसमें व्यक्ति पूर्व में बिताए हुए हर पल को सही मायने में महसूस करता है और खुद से अपने कार्यो का लेखा-जोखा करता है। 'अकेलेपन' से तात्पर्य स्थान विशेष से नहीं है, बल्कि उस पल से है जब व्यक्ति अपने विचारों में, अपने ख्यालों में, यहां तक कि सपनों में भी खुद को अकेला महसूस करता है।

मानव मन को जीवन में सबसे प्रिय क्या होता है, मेरी राय में- 'वात्सल्य'। जीवन के प्रारम्भ से ही हम 'मां' के रूप में ममता की मूरत से असीम वात्सल्य और प्रेरणादायी पिता के रूप में अमूल्य प्रेरणा स्रोत को प्राप्त करते हैं। जीवन क्रम बढ़ता है और हम भाई-बहन, मित्र-बंधु के माध्यम से बंधुत्व, मित्रता, अपनापन इत्यादि जैसी मानवीय भावनाओं से परिचित होते हैं और इनके महत्व को समझते हैं। इन अस्पष्ट सी भावनाओं के बीच आगमन होता है एक नये सिरे से विकसित हो रही समझ का जो उनके बड़ों के आपसी व्यवहार को नये परिप्रेक्ष्यों में तौलती है, उपलब्ध साहित्य, फिल्मों और टीवी में चल रही कहानियों में भी नये अर्थ मिलने लगते हैं, जिन्हें अपनी जिज्ञासाओं के बर-अक्स रखकर वे अपनी उन कोमल भावनाओं को नये शब्द, नयी परिभाषाएं, नये आयाम देने लगते हैं।

मनुष्य जीवन के दो पड़ाव कहे जा सकते हैं- एक जो यहां आकर समाप्त होता है और दूसरा जिसकी शुरुआत पहले की समाप्ति के साथ शुरू हो जाती है। इस दूसरे पड़ाव में मानव मन को प्रेम की नैसर्गिकता की, 'जीवनसाथी' की तलाश होती है। एक सामाजिक मन अपने जीवन के पहले पड़ाव के अनुभवों, समाज एवं व्यक्ति विशेष की इच्छा के अनुकूल अपने मन की इच्छा को पूर्ण करता है जो ज्यादा तर्कसंगत और व्यावहारिक भी है।

कुछ विशेष 'मन' इस सामाजिक अवधारणा से भिन्न कुछ इतर करने की चाह रखते हैं। वे अपने प्रति ही कृतज्ञ होते हैं और इस जटिल सामाजिक अवधारणा को बड़े सरल और सुंदर दृष्टांत द्वारा देखते हैं। उनके लिए चित्त एक सरोवर है और इच्छा उसमें उठने वाली लहर और आत्मा मानो चंद्रमा। उसी आत्मा रूपी चाह और चित्त रूपी सरोवर से उठने वाली लहरों को साक्षी मानकर जीवन के नैतिक पक्ष के अनुकूल अपने जीवन साथी का चयन करते हैं।

ऐसे क्षण में मन एकमुखी होकर दृढ़ इच्छाशक्ति से भर जाता है, जो सामाजिक बंधन के बावजूद अविरल अपने अन्तर्मन की चाहत और इच्छा को परिपूर्ण करता है। वे इस प्रेम के भावनात्मक आवेग के जरिए जीवन में पहली बार अपने अस्तित्व का, समाज से विलगित रूप में अहसास करते हैं और समाज के सापेक्ष अपनी एक अलग पहचान, अपने एक व्यक्तित्व को महसूस करते हैं। इसीलिए कहा गया है कि प्रेम, मनुष्य का समाज के खिलाफ पहला विद्रोह है।

अक्सर सभी मनुष्य प्रेम की इन भावनाओं से दो-चार होते हैं। कहीं ये पुरजोर रूप में सामने आती हैं तो कही सामाजिक मूल्यों के आगे दम तोड़ देती हैं। अक्सर, परिणति तक पहुंचे प्रेम विवाह भी असफल रहते हैं। यह वहीं होता है जहां इन प्रेम-विवाह के मूल में आत्मिक भावावेगों और जमीनी हकीकतों से, जिंदगी की ठोस भौतिक परिस्थितियों से अलगाव होता है।

जो प्रेम की इस भावना के प्राकृतिक आधारों को समझते हुए सामाजिक आधारों तक इसे व्यापकता देते हैं, प्रेम के सही अर्थों को ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं, इसे व्यक्तिगत और सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में समझने की कोशिश करते हैं, वे इस अंतर्विरोध में भी जिम्मेदारी निभाते है और अपनी व्यक्तिगत जरूरतों और सामाजिक सरोकारों के बीच एक तारतम्य बिठाते हैं। वस्तुतः, ये भावनाएं, ये अंतर्विरोध, ये द्वंद्व वास्तविक भौतिक परिस्थितियों से निगमित हो रहे हैं, इसलिए इनका हल भी वास्तविक भौतिक क्रियाकलापों और परिस्थितियों के अनुकूलन से ही निकल सकता है, न कि मानसिक क्रियाकलापों और कुंठाओं से, जो कि अंततः गहरे अवसादों का कारण बन सकते हैं।

अगर प्रेम सात्विक हो, किसी प्रलोभन या यौन कामना से प्रेरित न हो और हृदयजनित हो, तो यह मनुष्य को न केवल शरीर और मन की शुद्धि प्रदान करता है, बल्कि आरोग्य और ईश्वर प्रणिधान भी प्रदान करता है।

प्रबंधक
सीमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

सीएमटीआई का स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और प्रिसिजन मशीन टूल्स सेंटर

प्रकाश विनोद

मयंक पटेल

परिचय

केंद्रीय विनिर्माणकारी प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएमटीआई) के स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग, प्रिसिजन मशीन टूल्स और एग्रीगेट्स (सी–एसएमपीएम) केंद्र ने भारतीय विनिर्माण और अनुसंधान में एक नए विकास की शुरुआत की है। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग, इंडस्ट्री 4.0, उच्च सटीकता वाले मशीन टूल्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित समाधानों का विकास करना है। यह न केवल भारतीय उद्योगों को विश्वस्तरीय तकनीक प्रदान करता है, बल्कि अनुसंधान और विकास (आर एडं डी) को भी गति देता है।

सी–एसएमपीएम न केवल उन्नत मटेरियल कैरेक्टराइजेशन और नॉइस एवं वाइब्रेशन विश्लेषण की सेवाएं प्रदान करता है, बल्कि यह अनुसंधान एवं विकास (आर एडं डी) के तहत नई प्रौद्योगिकियों को भी विकसित करता है। यह केंद्र अनुसंधान, शिक्षा और उद्योगों के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का काम करता है, जो भारत के विनिर्माण क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए आवश्यक है।

अनुसंधान और विशेषज्ञता

सीएमटीआई का यह केंद्र मुख्य रूप से उच्च प्रिसिजन मशीन टूल्स, मशीन टूल्स के एग्रीगेट्स के डिज़ाइन, विकास और परीक्षण में विशेषज्ञता रखता है। स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और इंडस्ट्री 4.0 के साथ–साथ आईआईओटी (इंडस्ट्रियल इंटरनेट ऑफ थिंग्स), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल ट्विन्स के उपयोग के लिए भी यहां गहन अनुसंधान किया जाता है। इसके तहत मशीनों और विनिर्माण प्रक्रियाओं को स्वचालित, कुशल और सटीक बनाने के लिए नई तकनीकों का विकास किया जा रहा है।

सी–एसएमपीएम केंद्र, सीएमटीआई

स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग, औद्योगिक इंटरनेट ऑफ थिंग्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग में भारतीय उद्योगों के लिए नए अवसर पैदा करने के उद्देश्य से सीएमटीआई एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इंडस्ट्री 4.0 के तहत, सीएमटीआई ने 'स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग डेमो सेल' की स्थापना की है, जो उद्योगों और शैक्षिक संस्थानों के लिए एक सीखने और नवाचार करने का मंच है। यह केंद्र भारतीय विनिर्माण उद्योग को उन्नत प्रौद्योगिकियों के प्रयोग और विकास के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और उपकरण भी प्रदान करता है।

प्रमुख गतिविधियां

1. **स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग डेमो सेल का विकासः** सीएमटीआई ने एक अनुभव केंद्र और विकास के लिए एक प्लेटफार्म तैयार किया है, जो इंडस्ट्री 4.0 और स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग के उत्पादों के विकास और परीक्षण के लिए अत्याधुनिक सुविधा प्रदान करता है।
2. **एमएसएमई उद्योगों के लिए समर्थनः** सीएमटीआई ने छोटे और मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) के लिए स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग समाधान विकसित किए हैं, जिससे वे अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं को डिजिटल और सटीक बना सकते हैं। यह केंद्र स्थानीयकरण और अनुकूलन के जरिए उद्योगों की मदद करता है।
3. **कौशल विकास और प्रशिक्षणः** यह केंद्र उद्योगों के लिए रोजगार योग्य जनशक्ति तैयार करने के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम चलाता है। इसके तहत उद्योगों को इंडस्ट्री 4.0 के नए उपकरणों और तकनीकों के उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

सीएमटीआई का अल्ट्रा-प्रिसिजन प्रोडक्ट डेवलपमेंट

प्रिसिजन मशीन टूल्स और एग्रीगेट्स का डिज़ाइन और विकास

सीएमटीआई ने उच्च प्रिसिजन मशीन टूल्स और उनके एग्रीगेट्स के डिज़ाइन और निर्माण में बड़ी सफलता हासिल की है। ये मशीनें उच्चतम सटीकता के साथ जटिल भागों का निर्माण करने में सक्षम हैं, जिनकी आवश्यकता विभिन्न उद्योगों में होती है। इसका लक्ष्य भारतीय मशीन टूल उद्योग को आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि देश में उन्नत मशीन टूल्स के स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा मिल सके।

सीएमटीआई की अल्ट्रा-प्रिसिजन मशीनिंग प्रौद्योगिकी

सीएमटीआई ने अल्ट्रा प्रिसिजन मशीनिंग और नैनो-फिनिशिंग तकनीकों का विकास किया है, जो उद्योगों को उच्च सटीकता वाली मशीनिंग प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करती हैं। यह तकनीकें स्मार्ट मशीनिंग के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव ला रही हैं और भारत को ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब बनने की दिशा में आगे बढ़ा रही हैं।

एडवांस मटेरियल कैरेक्टराइजेशन (उन्नत सामग्री लक्षण-वर्णन):

सीएमटीआई ने एडवांस मटेरियल कैरेक्टराइजेशन के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं स्थापित की हैं, जो विभिन्न शोधकर्ताओं, उद्योगों और शैक्षिक संस्थानों के लिए खुली हैं। यह सेवाएं फील्ड एमिशन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (एफ.ई.एस.ई.एम) और फोकस्ड आयन बीम (एफ.आई.बी), एनर्जी डिस्पर्सिव एक्स-रे स्पेक्ट्रोस्कोपी (ई.डी.एक्स.) और उच्च-रिज़ॉल्यूशन ट्रांसमिशन इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (एच.आर.टी.ई.एम.) जैसी तकनीकों के जरिए प्रदान की जाती हैं।

यह केंद्र नई सामग्री अनुसंधान और प्रक्रिया विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो विभिन्न उद्योगों में उत्पादों की गुणवत्ता और सटीकता को सुधारने में मदद करता है। इसके साथ ही, यह केंद्र नैनो मेट्रोलॉजी और केरक्टरिज़ैशन के लिए उपकरण भी विकसित कर रहा है।

नॉइस एवं वाइब्रेशन विश्लेषण:

सीएमटीआई की नॉइस और वाइब्रेशन विश्लेषण प्रयोगशाला अत्याधुनिक तकनीकों से लैस है, जो मशीनों और उनके घटकों की प्रदर्शन क्षमता को मापने और सुधारने में मदद करती है। यह प्रयोगशाला कंपन, ध्वनि, तापमान, स्पिंडल त्रुटि मापन और गतिशील संतुलन जैसी विशेषताओं की सटीक माप और विश्लेषण करती है।

निष्कर्ष:

केंद्रीय विनिर्माणकारी प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएमटीआई) का स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और प्रिसिजन मशीन टूल्स केंद्र भारतीय उद्योगों को विकसित करने के लिए एक अभूतपूर्व मंच है। इसके द्वारा विकसित की गई उन्नत प्रौद्योगिकियां न केवल उद्योगों को आधुनिक समाधान प्रदान करती हैं, बल्कि भारत को आत्मनिर्भर और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

सीएमटीआई के इस केंद्र द्वारा विकसित तकनीकें, जैसे अल्ट्रा-प्रिसिजन मशीनिंग, स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और इंडस्ट्री 4.0, भारतीय विनिर्माण उद्योग को अगले स्तर पर ले जाने के लिए एक मजबूत आधारशिला रख रही हैं।

श्री प्रकाश विनोद
केंद्र प्रमुख एवं संयुक्त निदेशक, सीएमटीआई

श्री मयंक पटेल
वैज्ञानिक-बी, सीएमटीआई

राधा का ढाबा

अरुण कुमार दीवान

पटना के दिल में, जहाँ गंगा प्राचीन रहस्यों को फुसफुसाती है और गलियाँ जीवन से धड़कती हैं, एक छोटा सा ढाबा स्थित है जो अपने रसोईघर से आने वाली खुशबुओं जितनी ही समृद्ध कहानी रखता है। यह कोई सड़क किनारे स्थित साधारण ढाबा नहीं है। यह राधा का ढाबा है, और इसकी कहानी ऐसी है जिसका आनंद लेना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे यह जो व्यंजन परोसता है।

राधा इस दुनिया में एक अतिरिक्त गुणसूत्र और एक ऐसे दिल के साथ आई जिसमें पूरी मानवता के लिए जगह थी। डाउन सिंड्रोम, डॉक्टरों ने इसे कहा, उनकी आवाज़ में एक ऐसी दया थी जिसे राधा के माता-पिता ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया। क्योंकि उन्होंने अपनी बेटी की आँखों में सीमा नहीं, बल्कि असाधारण क्षमता की एक चिंगारी देखी।

जैसे-जैसे राधा एक युवा महिला में खिलती गई, वह चिंगारी दृढ़ संकल्प की लौ में बदल गई। उसके बीसवें जन्मदिन पर, जब अधिकांश माता-पिता अपने बच्चे के भविष्य के बारे में चिंतित हो सकते थे, राधा के माता-पिता ने उसे एक चाबियों का सेट दिया। उन्होंने कहा यह 'यह ढाबा' तुम्हारा अपना है तुम्हारे अपने सपनों को सच करने के लिए।'

और उनके इन शब्दों पर राधा की आँखों में चमक आ गई। उस क्षण से, कोने पर स्थित छोटा सा ढाबा सिर्फ खाने की जगह से कहीं अधिक बन गया - यह राधा की असीम आत्मा के लिए एक कैनवास बन गया।

राधा भोर होते ही ढाबे पर आ जाती, उसकी हँसी उबलती चाय की खुशबू की तरह महक उठती। वे हर ग्राहक का स्वागत ऐसे करती जैसे वे किसी भव्य दावत में सम्मानित अतिथि हों, चाहे उन्होंने एक साधारण वड़ा पाव मंगाया हो या पूरी थाली। उसकी देखभाल में, ढाबा तरक्की करने लगा। दीवारें, जो कभी फीकी दिखाई पड़ती थीं, अब रंगों से भर गई थी- हर चित्रकला एक कहानी, हर पेंटिंग एक सपने को चित्रित करती थी। मेनू, जिसमें कभी सीमित व्यंजनों का ही विकल्प था, अब न केवल पारंपरिक व्यंजनों को शामिल करने के लिए विस्तारित हुआ, बल्कि स्वादिष्ट कपकेक और पेस्ट्रियों को भी शामिल किया गया जिन्हें राधा ने उसी उत्साह के साथ बनाना सीखा जो वह जीवन में हर चीज़ पर लागू करती थी।

लेकिन यह एक उमस भरी गर्मी की दोपहर थी, जब हवा में नमी और अधूरे सपनों का बोझ था, कि नियति ने राधा की कहानी में जादुई रूप से प्रभावित किया।

एक जोड़ा ढाबे में लड़खड़ाता हुआ आया, उनके चेहरों पर चिंता की लकीरें उनके कष्ट को दिखा रही थीं जैसे मानो वे इन कष्टों को वर्षों से जी रही थीं। वे झिझकते हुए काउंटर की ओर बढ़े, आँखें नीची किए, आवाज़ें मुश्किल से फुसफुसाहट से ऊपर, जैसे उन्होंने मेनू पर दो सबसे सस्ती चीज़ों के लिए पूछा। उस आदमी ने बताया कि 'हमारे पास भोजन के लिए पैसा नहीं है, शर्म से उसका चेहरा लाल था।

अब, हो सकता है कि राधा वित्तीय संकटों या कॉर्पोरेट दिवालियेपन की जटिलताओं को न समझती हो, लेकिन वह भूख और निराशा के लुक को ऐसे पहचानती थी जैसे वे पुराने परिचित हों। बिना एक पल की देरी किए, वह रसोई में चली गई, उसके हाथ धुंधले से दिखाई दे रहे थे जैसे वह न केवल एक भोजन, बल्कि एक दावत तैयार कर रही थी।

जोड़े ने आश्चर्य से देखा कि उनके सामने एक के बाद एक व्यंजन प्रकट हुए-सुगंधित बिरयानी, जिसके चावल घी से चमक रहे थे; मलाईदार दाल जो आराम का स्वाद देती थी; कुरकुरे, सुनहरे समोसे; और अंत में, दो लंबे गिलास आम की लस्सी के, जिनके ऊपर पिस्ता का छिड़काव किया गया था। 'खाओ', राधा ने उन्हें आग्रह किया, उसकी मुस्कान उतनी ही गर्म थी जितना उसने परोसा था खाना।

उन्होंने ऐसे खाया जैसे यह उनका आखिरी खाना हो, हर निवाले का आनंद लेते हुए, उनकी आँखें अनकही आँसुओं से चमक रही थीं। जब वे आखिरकार खत्म कर चुके, तो आदमी ने कांपते हाथों से अपना घिसा हुआ बटुआ निकाला। लेकिन राधा तेज़ थी। उसने अपने दोनों हाथों से उसकी उंगलियों को बंद करते हुए एक मुड़ा हुआ नोट उसकी हथेली में थमा दिया ।

भ्रमित होकर, आदमी ने नोट खोला। उसकी पत्नी पढ़ने के लिए झुकी और एक पल के लिए, ऐसा लगा जैसे राधा के ढाबे में समय ठहर गया हो। नोट में लिखा था:

"आपकी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, मैंने आपका बिल अपने व्यक्तिगत खाते से चुका दिया है। कृपया मेरी ओर से 2000 रुपये का यह उपहार स्वीकार करें। यह मैं जो कर सकती हूँ उसमें सबसे कम है। आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद।
-राधा"

जोड़े ने ऊपर देखा, उनकी आँखें अविश्वास से चौड़ी हो गईं, केवल राधा को अपनी ओर मुस्कुराते हुए पाया, उसका चेहरा देने के आनंद से जगमगा रहा था। वे ढाबे से भरे पेट और कृतज्ञता से भरे दिल के साथ निकले, वे अनजान थे कि वे अपने साथ एक ऐसी कहानी के बीज ले जा रहे थे जो जल्द ही पूरे देश में खिल उठेगी।

तत्काल कनेक्टिविटी के इस युग में, दया के कार्यों का डिजिटल परिदृश्य जंगल की आग की तरह खबर फैलाने का एक जबरदस्त तरीका है। जोड़े ने, शब्दों से परे भावुक होकर, अपना अनुभव सोशल मीडिया पर साझा किया। उनकी पोस्ट, इंटरनेट के विशाल सागर में फेंका गया एक ऐसा डिजिटल कंकड़ था जिसने, ऐसी लहरें पैदा कर दीं जो जल्द ही तरंगों में बदल गईं।

घंटों के भीतर, राधा की करुणा की कहानी ने भारत और समस्त विश्व के जनमानस के दिलों को छू लिया था। समाचार चैनलों ने छोटे से ढाबे पर संवाददाता भेजे, उनके कैमरे उस मुस्कान को कैप्चर करने के लिए उत्सुक थे जिसने हज़ारों दिल जीत लिए

थे। लेकिन राधा ने, अपनी इस सादगी में, इस ध्यान में प्रसिद्धि का अवसर नहीं, बल्कि प्यार और स्वीकृति का संदेश फैलाने का एक मंच देखा।

साक्षात्कारों में, उसने अपने दया के कार्य के बारे में नहीं, बल्कि एक ऐसी दुनिया के लिए अपने सपनों के बारे में बात की जहाँ हर कोई, अपनी विभिन्नताओं के बावजूद, सूरज के नीचे अपनी जगह पा सके। बिना फ़िल्टर के, और दिल से निकले उनके शब्द, लाखों लोगों के दिल को छू गए। यहाँ एक युवा महिला थी जिसे डाउन सिंड्रोम था, जो अपना व्यवसाय चला रही थी और दुनिया को करुणा और समावेश के बारे में सिखा रही थी।

प्रभाव गहरा और दूरगामी था। स्थानीय व्यवसाय, राधा के उदाहरण से प्रेरित होकर, न केवल उसके ढाबे के लिए, बल्कि अन्य विकलांग उद्यमियों के लिए भी धन जुटाने के कार्यक्रम आयोजित करने लगे। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के परिवारों ने राधा के ढाबे में एक अभयारण्य पाया, एक ऐसी जगह जहाँ वे अपनी कहानियाँ साझा कर सकते थे, समर्थन पा सकते थे और सबसे महत्वपूर्ण, यह देख सकते थे कि क्या संभव है।

जैसे-जैसे हफ्ते महीनों में बदले, राधा का ढाबा बदल गया। यह न केवल आकार में बढ़ा, बल्कि इसके उद्देश्य में भी विस्तार था। राधा ने कर्मचारियों को नियुक्त किया, उन लोगों को प्राथमिकता देते हुए जो, उसकी तरह समाज द्वारा कम आंके गए थे। ढाबा समावेशी रोजगार का एक मॉडल बन गया, एक ऐसी दुनिया में आशा का प्रतीक जो अक्सर उन लोगों की क्षमता को अनदेखा कर देती है जो अलग हैं।

ईश्वर यदि किसी भी व्यक्ति को किसी तरह की कम क्षमता देता है, तो बदले मे किसी और तरह की असाधारण क्षमता भी देता है, जिसकी कोई सीमा नहीं होती। बस जरूरत होती है उस क्षमता को पहचानने की और उसे प्रोत्साहन देने की। सपनों को जादू की तरह सच करने के लिए।

निदेशक
(कॉर्पोरेट सेल)
भारी उद्योग मंत्रालय

पेड़

अनन्त मोहन सिंह

यह अन्य सुबह की तरह एक सामान्य सुबह थी। सूरज वैसे ही उगा जैसे हर दिन उगता है। रात के अँधेरे ने आसमान का रंग लाल कर दिया जो नारंगी और फिर नीले रंग में बदल गया। आसमान साफ़ था। यह किसी भी अन्य दिन की तुलना में अधिक स्पष्ट था। उसमें जो भी नमी थी वह पृथ्वी को वापस दे दी गई थी। खिड़की से बाकी लोगों के अपनी सामान्य दिनचर्या के लिए जाने की आवाज़ आ रही थी। फिर भी सुबह कुछ अलग सी महसूस हुई। कुछ कमी थी। तब मुझे एहसास हुआ कि पक्षियों की सामान्य चहचहाहट अब नहीं है।

जब पेड़, उनके खेलने का मैदान नहीं था तो पक्षी कैसे गायेगें? मैं खिड़की के पास चला गया। खिड़की के बगल वाला पेड़ और उसके बगल वाला बड़ा पेड़ वहां नहीं थे। लकड़ी की ठूंठ और ताज़ा गंध बता रही थी कि पेड़ हाल ही में काटे गए हैं। हाउसिंग सोसायटी को कल ही दोनों पेड़ काटने पड़े।

जितना अधिक मैंने ''स्टॉम्प्स'' को देखा, उतनी ही मुझे पेड़ की याद आती गई। बड़ा वाला मेरे सामने था। यह हमारे घर की सीमा के बाहर था। वह मेरे द्वारा लगाया पहला पेड़ था जिसे मैं अपने दादाजी के साथ मेले से खरीद कर लगाया था। गांव जाते समय उन्होंने मुझसे इसका ख्याल रखने को कहा था।

मेरे दादाजी के लिए मेरा प्यार नए पौधे के लिए प्यार में बदल गया। हर सुबह मैं पौधे को पानी देता। मैं उस पौधे से बात भी करने लगा था। इस तरह पौधा मुझसे 6 साल छोटा था। जल्द ही पौधा बड़ा हो गया और 2 साल में उसकी ऊंचाई मुझसे ज्यादा हो गई। इस देखभाल और खिड़की से सबसे पहले दिखने वाली चीज़ होने से हमारे बीच एक विशेष रिश्ता बन गया। हर दिन, सुबह जब मैं बाहर देखता था तो मुझे महसूस होता था, मानो पेड़ अपने पत्ते हिलाकर स्वागत कर रहा है। पहले मैं पत्तों की संख्या गिनता था लेकिन जल्द ही वह संख्या काफी बढ़ गई और मैं शाखाएँ गिनने के लिए मुड़ा। मैं अपने प्रयास से खुश था। मैं दादाजी को अपना काम दिखाने के लिए उत्सुक था।

इतने वर्ष बीत गए। मैं एक कक्षा से दूसरी कक्षा में चला गया। पेड़ भी बड़ा होता गया। शाखाओं को गिनना कठिन था। हर सुबह जब मैं खिड़की से देखता, पेड़ वहीं होता। उपलब्धि की भावना थी, तृप्ति की भावना थी। इसे देखने से मन शांति से भर जाता और मुझे दिन भर के लिए उत्साहित कर देता। दिन में चाहे जो भी हो, पेड़ को देखने से मेरा सारा दर्द दूर हो जाता। एक दिन अचानक मैंने उसे गुड मॉर्निंग कह दिया। मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो पेड़ ने मेरी बात सुनी, क्योंकि उसकी शाखाएँ हिल रही थीं और पत्तियाँ फड़फड़ा रही थीं।

फिर पेड़ को गुड-मॉर्निंग कहना एक रस्म बन गया। बिस्तर छोड़ने के बाद मैं खिड़की के पास जाता और पेड़ को देखकर उसे शुभकामनाएं देता। मुझे हमेशा लगता कि पेड़ भी मुझे शुभकामनाएं दे रहा है। जैसे-जैसे समय बीतता गया मैंने अपनी उपलब्धियों, असफलताओं को इसके साथ साझा करना शुरू कर दिया। जब मैं अपना दुख साझा करता, हमेशा राहत की अनुभूति होती। मुझे पता था कि पेड़ मेरी बात सुन रहा है।

उम्र में यह मुझसे छोटा था, लेकिन मुझे हमेशा लगता कि अनुभव में यह मुझसे परिपक्व हो गया है।

जब पहली बार इसने फल दिया, तब मैं कक्षा 7 में था। मैंने दादाजी के बारे में सोचा। मैं सोचता था कि आम देखकर वह कितना खुश होते। मुझे पता था कि मैं उस वर्ष परीक्षा में भी अच्छा प्रदर्शन करूंगा। छात्रवृत्ति परीक्षा में मैंने जिला में टॉप किया।

पेड़ मेरा छोटा भाई, मेरा विश्वासपात्र और मेरा सलाहकार था। हर दिन, जब मैं बाहर जाता, पेड़ से इसके बारे में बात करता। मैंने हमेशा महसूस किया कि पेड़ मेरी सफलता के लिए प्रार्थना कर रहा है। वापस आकर मैं दिन भर की घटना उसके साथ साझा करता।

एक दिन कम दबाव का क्षेत्र बना। सुबह से ही आसमान में अंधेरा था। एक भयानक सन्नाटा सा। ऐसा लगा, जैसे यह आने वाली घटनाओं के बारे में चेतावनी दे रहा हो। पक्षी चहचहा नहीं रहे थे। सुबह करीब 10 बजे बूंदाबांदी शुरू हो गई। दोपहर तक बाहर जाना संभव नहीं था। चाहे कितनी भी बारिश हो, आसमान में पहले जैसा ही अंधेरा था। शाम जल्दी आ गयी। एहतियात के तौर पर बिजली आपूर्ति काट दी गई। तूफान के जल्दी खत्म होने की कामना करते हुए हम सभी सो गए।

अगले दिन सुबह बारिश रुकी, उससे पहले ही हवा काफी धीमी हो गई थी। हम सब बाहर की स्थिति देखने निकले। पक्षी अभी भी दूर थे, शायद निरीक्षण कर रहे थे, अपने घोंसले में जो कुछ बचा था उसकी मरम्मत कर रहे थे। जैसे ही मैं बाहर निकला तो मैंने देखा कि तूफान ने कितना नुकसान किया है। आम का पेड़ झुक गया था। उसकी आधी से ज्यादा जड़ बाहर निकल आई थी। उसके ऊपर बड़ा सा पेड़ था। बड़ा पेड़ आम के पेड़ पर टूट पड़ा था और आम के पेड़ ने उसे रोक रखा था।

देखते ही देखते आसपास के लोग जमा हो गए। सभी लोग पेड़ के कारण चमत्कारिक ढंग से बच निकलने पर आश्चर्य कर रहे थे। अगर आम का पेड़ नहीं होता तो बड़ा पेड़ पतझड़ के कारण से हमारे घर पर गिर जाता। कुछ भी नुकसान हो सकता था।

कुछ लोग चमत्कार के बारे में आश्चर्यचकित थे। कुछ लोग कह रहे थे कि हमने जरूर कुछ अच्छा किया होगा। सभी अनुमान लगा रहे थे कि अगर आम का पेड़ न होता तो क्या होता।

मैं पेड़ को देख रहा था। मेरी आँख नम हो गयी। अपने आंसुओं को रोकते हुए, मैं अपने कमरे में वापस चला गया। मैं पेड़ को देखकर रोया। मैं आभारी भी था और दुखी भी। आम के पेड़ की जड़ कमजोर हो गई थी। इसलिए दोनों पेड़ों को काटना पड़ा।

नगरपालिका वाले आये। मैं अपने कमरे में था और उन्हें पेड़ काटते हुए देख रहा था। मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे। मुझे लगा कि पेड़ मुझसे बातें कर रहा है। इसकी देखभाल करने के लिए, उसका मित्र होने के लिए मुझे धन्यवाद दे रहा था और बता रहा था कि अब उसके जाने का समय हो गया है। मुझे फिर से धन्यवाद दे रहा था। यह मेरे लिए बहुत ज्यादा था। मैं बिस्तर पर गया और बहुत रोया। उन्होंने उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और ट्रक पर लादकर चले गए।

सभी सामान्य जीवन में वापस लौटने की कोशिश कर रहे थे। जल्द ही जीवन की खुशियाँ और कष्ट हावी हो गए। हर सुबह मैं सुप्रभात कहने, अपने दैनिक अनुभव साझा करने की अपनी परंपरा नहीं कर पाने से कुछ खोने का अनुभव महसूस कर रहा था।

अगले सीज़न में, मैंने एक नया दोस्त बनाया ताकि जिसे मैं मन की बात को साझा कर सकूं और एक आम का पौधा उसी जगह लगा दिया।

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक
एण्ड्रू यूल एण्ड कम्पनी लिमिटेड

जज़्बात

संदीप शुक्ला

मई 1995 की बात है। बिरहाना रोड के पास नीलवाली गली में श्री निर्मल जैन की ट्रॉफी और स्मृति चिह्न बनाने की दुकान थी। वह कानपुर में अकेले ऐसे दुकानदार थे जो ग्राहकों की पसंद के अनुसार ट्राफी एवं स्मृति चिह्न बनाते थे। पूरे नगर क्या बाहर से भी लोग उनको पूछते हुए चले आते। दरअसल वह बहुत अच्छे डिजाइनर और कलाकार थे- मेरे बड़े भाई समान। मैं बैंक से लौटते समय उनकी दुकान पर अक्सर रुक जाता था।

शाम का वक्त था। कोई 14-15 साल की उम्र के तीन लड़के उनकी दुकान पर आए। इन बच्चों को देख कर ये समझने में देर नहीं लगी कि ये किसी गरीब परिवार से हैं। उनको क्रिकेट की दो ट्रॉफी और तीन प्राइज लेने थे। उन्होंने कोई टूर्नामेंट कराया था। काफी देर देखने-समझने के बाद उन्हें जो ट्रॉफी पसंद आई वह दोनों उस समय 400 रुपए की थी और तीनों प्राइज 300 रुपए के थे। यानी, कुल सात सौ रुपए बनते थे। उन बच्चों ने कहा, ''अंकल हमारे पास केवल चार सौ रुपए ही हैं, आप दे दीजिए।''

जैन साहब ने कहा 'बेटा इसमें इतना मार्जिन नहीं है। मैं तुम्हे 6 सौ रुपए तक दे सकता हूं।' बच्चे बहुत समझदार थे।

एक बोला 'अंकल आप किसी तरह दे दीजिए, हम आपको जीवन भर याद रखेंगे।'

दूसरे ने कहा 'अंकल जी दे दीजिए ना।'

तीसरा बोला 'जब हम कमाएंगे तब आपके दो सौ रुपए दे जायेंगे।'

जैन साहब उन लड़कों की बातें सुन कर असमंजस में पड़ गए। उनका मन उन लड़कों की बात मान लेने को करने लगा। तब तक मैंने कहा बताओ इसमें लिखवाना क्या है। 'एक लड़के ने बताया 'श्री दीवान सिंह मेमोरियल जूनियर क्रिकेट टूर्नामेंट।'

मैंने पूछा, बेटा ये दीवान सिंह जी कौन थे?

एक लड़के ने साथ के लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा 'इसके पापा थे। बीस तारीख को उनकी बरसी है।' मैंने देखा, वह लड़का जिसकी ओर इशारा किया गया था, उसकी आंखें छलक पड़ीं। उसने जल्दी से अपनी बाहों से उन्हें पोछ कर छिपाने का प्रयास किया। उस लड़के के आंसू देख कर हम लोगों की आंखें भी नम हो गई।

चलते हुए बच्चों ने हम लोगों के पैर छुए और 400 रुपए देने लगे। उन नोटों में कोई भी नोट दस के नोट से बड़ा नहीं था। जैन साहब ने बच्चों से कहा ''ये रुपए रहने दो ये ट्राफी मेरी तरफ से उपहार हैं।''

कुछ देर वे बच्चे एक दूसरे को देखते रहे फिर पुनः पैर छूकर धन्यवाद देकर चले गए।

अगले दिन वे लड़के जब आए और जैन साहब ने उन्हें 'श्री दीवान सिंह मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट' लिखी ट्रॉफी और इनाम दिए तो उनकी खुशी देखने लायक थी।

एक लड़के ने कहा, ''अंकल अब हम इन बचे हुए पैसों से सबको नाश्ता करा देंगे। बहुत मुश्किल से सबसे मांग मांग कर ये चार सौ रुपए एकत्र कर पाए थे। आप लोग भी आइएगा।''

उनके जाने के बाद मैंने जैन साहब से कहा, ''इन बच्चों ने इस छोटी सी उम्र में ही जिंदगी में रिश्ते निभाने की प्रतियोगिता जीत ली है।''

आर्टीजन
बीएचईएल, हरिद्वार

नई राह–आत्मनिर्भरता, नवाचार और हरित क्रांति

श्वेतांशु

दिल्ली में अमित और सूरज- दोनों बचपन के मित्र थे। दोनो ने साथ-साथ- इंजीनियरिंग की डिग्री ली और अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने लगे। अमित ने एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम में काम करना शुरू किया जो भारी उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत आता है, और सूरज एक निजी कंपनी से जुड़ गया। अमित का बचपन से सपना था कि भारत को औद्योगिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हुए देखे और वह अपने काम के जरिए इस सपने को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध था।

साल 2014 में सरकार ने **'मेक इन इंडिया'** अभियान की शुरूआत की और इस अभियान का उद्देश्य देश को औद्योगिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना था। अमित की कंपनी ने इस पहल के तहत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह भारी मशीनरी और उपकरण बनाने वाले विभाग में कार्यरत था और नए-नए नवाचारों पर काम कर रहा था। उसकी कंपनी ने आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वदेशी तकनीक पर जोर देना शुरू किया। अमित को इस बात पर गर्व महसूस हुआ कि वह अपने देश की आर्थिक नींव को सशक्त बनाने में योगदान दे रहा है।

एक दिन सूरज उससे मिलने आया। सूरज ने पूछा, 'अमित, तुम इस बड़े उद्योग में काम कर रहे हो, लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि इस तेज़ी से बढ़ते उद्योग का पर्यावरण पर क्या असर हो रहा है?'

अमित ने मुस्कुराते हुए कहा, 'सूरज, यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि आज की हमारी नीति सिर्फ उत्पादन पर ही केंद्रित नहीं है, बल्कि हम हरित भविष्य और सतत विकास की ओर भी कदम बढ़ा रहे हैं। हमारी कम्पनी ने हाल ही में कई नई परियोजनाएँ शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए उद्योगों को आगे बढ़ाना है।'

सूरज ने हैरानी से पूछा, 'क्या सच में पर्यावरण के साथ तालमेल रखते हुए उद्योग चलना मुमकिन है?'

अमित ने उसे समझाते हुए कहा, 'बिल्कुल ! अब हमारी कंपनी में हमने सौर ऊर्जा का उपयोग शुरू कर दिया है। हमने अपने उत्पादन में ऐसे नवाचारों

को अपनाया है जिससे ऊर्जा की बचत हो सके और कार्बन उत्सर्जन कम हो। इसके अलावा, हम जल संरक्षण तकनीकों का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। हम ये सुनिश्चित कर रहे हैं कि पर्यावरण के अनुकूल होते हुए विकास की रफ्तार कभी थमे नहीं।

सूरज ने कहा, 'यह तो अद्‌भुत है, लेकिन क्या यह मेक इन इंडिया के तहत हो रहा है?'

अमित ने उत्तर दिया, 'हां, मेक इन इंडिया अभियान सिर्फ उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नहीं है, बल्कि इसके तहत स्वदेशी तकनीक, नवाचार और हरित उद्योगों पर भी जोर देने के लिए हैं। हमारी कम्पनी ने इस दिशा में कई कदम उठाए हैं। हम स्वदेशी तकनीक से नई-नई मशीनें बना रहे हैं, जो न केवल आत्मनिर्भरता की दिशा में हमें आगे बढ़ा रही हैं, बल्कि पर्यावरण के साथ भी संतुलन बनाए हुए हैं।'

अमित ने सूरज को अपनी कंपनी की एक परियोजना के बारे में बताया, जिसमें उन्होंने पुरानी मशीनों को अपग्रेड करके ऊर्जा दक्षता को 30% तक बढ़ाया था। इस परियोजना से उद्योग की उत्पादकता भी बढ़ी और पर्यावरण को भी आगे कम नुकसान होगा।

सूरज ने कहा, 'तुम्हारी बातों से मुझे एहसास हो रहा है कि हमारी औद्योगिक क्रांति अब एक नई दिशा में जा रही है, जहाँ विकास के साथ-साथ पर्यावरण का भी ध्यान रखा जा रहा है। यह सच में हमारे देश के लिए गर्व की बात है।'

अमित ने कहा, 'हां, यह हमारे देश के विकास का नया दौर है। आत्मनिर्भरता, सतत विकास और नवाचार के साथ हम न केवल एक मजबूत औद्योगिक शक्ति बनेंगे, बल्कि एक हरित और सुरक्षित भविष्य का निर्माण भी करेंगे।'

सूरज ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अमित, मुझे खुशी है कि तुम इस क्रांति का हिस्सा हो। सच में, यह भारत के भविष्य की एक नई दिशा है।'

नैतिक पक्ष

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्ची औद्योगिक प्रगति तभी संभव है जब आत्मनिर्भरता, नवाचार और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन हो। भारत की औद्योगिक क्रांति अब न केवल विकास पर केंद्रित है, बल्कि सतत विकास और हरित भविष्य की दिशा में भी कदम बढ़ा रही है।

उप-प्रबंधक
ब्रिज एण्ड रूफ कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

माधव और बंटी

मधुर कुमार जैन

माधव पूरे तीन साल बाद आज अपने गांव की उस गली में वापस आया था जहां उसकी फिजिक्स की कोचिंग चलती थी। ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में सप्ताह के छह दिन वह इन्हीं गलियों में भटकता रहता। बारहवीं पास करते ही वह आगे की पढाई के लिए शहर चला गया। आज इस गली के उसने तीन से चार चक्कर लगाए। उसके जेहन में वे सब यादें ताजा हो गयीं, जैसे इन गलियों में रोज का आना-जाना, कोचिंग खत्म होते ही क्रिकेट खेलने निकल जाना या नदी के किनारे जाकर घण्टों बैठना और दोस्तों के साथ बैठकर भविष्य की सुंदर योजना बनाना। उसे ये सब बाते एक के बाद एक याद आने लगीं। इससे उसके चेहरे पर मुस्कान उभर आयी।

ग्यारहवीं के दिन बड़े शानदार होते हैं। दसवीं की परीक्षा भी पास हो जाती है और बचपन की आखिरी किताब भी तो दसवीं ही है, ग्यारहवीं तो जवान होने की कहानी है। माधव ख्यालों में डूबा हुआ चला जा रहा था। तभी उसके कानों में एक आवाज गूंजी। मुड़कर देखा तो पाया कि उसका दोस्त बंटी उसकी तरफ भागता चला आ रहा है।

माधवः "क्यों भई जंगबहादुर, क्या हाल"?

बंटीः "अरे यार, काहे का जंगबहादुर! हमारा नाम बंटी है। और सुनो, हमें ये जंगबहादुर-फहादुर जैसे फालतू नामों से मत पुकारा करो अब गली के बच्चे भी हमें जंगबहादुर कहने लगे हैं। तुम तो शहर चले गए, लेकिन अपने पीछे चिढ़ाने वाले छोड़ गए"।

माधवः "अरे, नाराज न हो भाई। तुम मेरे खास मित्र हो। मैं तुम्हें जंगबहादुर बुलाऊं या बंटी। मेरा मन है, तुमको आपत्ति नहीं होनी चाहिए"।

बंटीः ''हम्मम.... और बताओ कब आए''?

माधवः "बस, अभी दो घण्टे पहले"।

बंटीः ''तुम बहुत बदल गए यार। न कोई फोन, न कोई खबर। रहते कहां हो कि पुराने दोस्तों से मिलने का भी वक्त नहीं! कभी तो याद कर लिया करो!

माधवः "अरेरेरे, इतने सवाल एक साथ! सांस तो ले लो भाई। तुम्हारे सारे सवालों का जवाब दूंगा, पहले नदी किनारे चलते हैं। वहीं बैठकर बात करेंगे। ऐसा करते हैं, कुछ खाने-पीने को भी ले चलते हैं"।

बंटीः "ये हुई न बात"।

बंटी और माधव स्कूल में साथ पढ़े, पर बंटी अपने आर्थिक हालातों के चलते आगे की पढ़ाई के लिए शहर नहीं जा सका था। जब भी माधव शहर से वापस आता, तो बंटी से जरूर मिलता। माधव, बंटी को प्यार से ''जंगबहादुर'' कहता क्योंकि बंटी था भी ऐसा ही। जहां कहीं लड़ाई की बात आती, सबसे पहले हाजिर। बंटी हमेशा सेना, जंग और विदेश राजनीति के संदर्भ में कयास लगाता और चहचहाते हुए कहता कि ''कि अमेरिका और पाकिस्तान दोस्त हैं, वहीं रूस और भारत दोस्त हैं और इधर चीन और उत्तर कोरिया भी दोस्त हैं। अगर उत्तर कोरिया, अमेरिका पर मिसाइल छोड़ दें तो पश्चिम में युद्ध के शुरू होते ही भारत में भी इसका असर दिखेगा। इससे सैनिकों की जरूरत बढ़ सकती है तो नए लोगों को भर्ती करना पड़ेगा। ऐसे समय में सेना में हमारी नौकरी लग सकती है"। इस पर माधव हंसते हुए कहता ''तो तुम्हें यकीन है कि तीसरा विश्वयुद्ध ही तुम्हारी नौकरी लगा सकता है"? इस पर बंटी झेंप जाता और चिढ़ते हुए कहता,

सोचो, अगर दूसरा विश्वयुद्ध नहीं हुआ होता तो दुनिया में इतने आविष्कार ही नहीं हुए होते"। माधव उसे समझाते हुए कहता, ''यह बहुत ही भ्रमित करने वाला आकलन है"। इस तरह की बातें दोनों में होती रहतीं। आज दोनों बहुत दिन बाद नदी के किनारे बैठै हैं।

"और बताओ बंटी, क्या हाल-चाल, कोई मिली कि नहीं", माधव ने नदी में पत्थर उछालते हुए कहा, "जाओ यार हम इन कामों के लिए नहीं हैं, हमें सेना में जाना है।" माधव कनखियों मुस्कुराया। उसे महसूस हुआ कि ये बिल्कुल भी नहीं बदला।

तभी बंटी ने सवाल दागा, "जब भी तुम गांव आते हो, तो कोंचिग वाली गली में क्यों भटकते हो? कोई रहता है क्या तुम्हारा"? माधव, बंटी का इशारा समझ गया और बोला ''तुमको पता तो है कि कौन रहता है हमारा। बंटी ने पुछा, "आगे क्या सोचा है"? माधव कुछ पल ठहरकर बोला, ''देखो भाई बंटी, तुम जानते हो, मेरे और कस्तूरी के बीच में क्या है।'' कुछ महीनों में मेरी बैंक में जॉइनिंग आने वाली है। नौकरी जॉइन करते ही मैं कस्तूरी के घर शादी का रिश्ता भेजने वाला हूं। बंटी ने पूछा, ''मेरे दो सवाल हैं- पहला यह कि तुम्हारी उम्र अभी इक्कीस साल है, तुम इतनी जल्दी शादी क्यों करना चाहते हो? और, दूसरा यह कि कस्तूरी ही क्यों?

"मैं तुम्हारे दूसरे सवाल का उत्तर देना चाहता हूं और मैं समझता हूं कि इससे तुम्हें पहले प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा"- माधव ने सांस छोड़ते हुए कहा। माधव आगे बोला, "तुम्हें याद है बंटी", माधव ने कहा कि कैसे ग्याहरवीं कक्षा में, मैं कस्तूरी की एक झलक के लिए मरता था। बंटी मुस्कुराते हुए बोला ''अच्छी तरह"। माधव अपनी बात जारी रखते हुए बोला, "फिजिक्स की बोरिंग क्लास सिर्फ इसलिए अच्छी लगती थी क्योंकि उसमें कस्तूरी आती थी"। जब मैं शहर चला गया, तब भी मेरा कस्तूरी से पत्र व्यवहार बना रहा, मुझे यह पता ही नहीं चला कि कब मेरा आकर्षण, प्रेम में बदल गया और यकीन मानना बंटी, स्नातक की परीक्षा पास करने के साथ ही बैंक पीओ का पेपर पास करने की प्रेरणा कस्तूरी ने ही दी थी"। बंटी बोला, "पर तुम तो पीएचडी करना चाहते थे, रिसर्च करना चाहते थे, दुनिया देखना चाहते थे अचानक नौकरी करने की योजना कैसे बना ली? माधव दार्शनिक अंदाज में बोला, ''बंटी कस्तूरी के पिता उसकी शादी कहीं और करने वाले हैं, अगर मेरे पास नौकरी या काम-धंधा नहीं होगा तो कस्तूरी के पिता उसकी शादी कहीं और कर ही देंगे", इसलिए मुझे अपने सपनों को दूसरे पायदान पर रखना पड़ा। इन पांच सालों में कस्तूरी मेरे वजूद का हिस्सा बनी रही है और वह भी मुझसे शादी करना चाहती है। माधव ने आगे कहा "मेरा मानना है कि जो लड़की आज तक मेरी तरक्की में बाधा नहीं बनी, वह आगे भी नहीं बनेगी और मैं अपने सपनों को आगे रखकर कस्तूरी को भुला दूं तो मेरे जीवन पर धिक्कार है"।

यह कहकर माधव चुप हो गया। नदी कलकल की ध्वनि करते हुए बह रही थी, दिन ढलने को था, पक्षी चहचहाते हुए अपने बसेरों पर लौट रहे थे। नदी के दूसरे किनारे पर जंगल है वहां दूसरी तरफ कुछ हिरण पानी पीकर अपने बसेरे लौट जाने की जलदी में हैं। बंटी उन हिरणों की ओर इशारा करते हुए बोला, देखो, क्या ऐसा नजारा शहर में मिलता है? माधव मुस्कुराते हुए बोला, नहीं मिलता, पर ये बताओ क्या तुम्हें तुम्हारे दोनों प्रश्नों के उत्तर मिल गए? "हां मिल गए" बंटी ने मुस्कान के साथ कहा।

बंटी पढ़ाई में कमजोर था परन्तु, शारीरिक रूप से दक्ष था। दस मील भागकर दो सौ दंड लगाना उसका रोज का काम था। इससे उसका शरीर सुगठित और कीर्तियुक्त हो गया था, पर गणित में फिसड्डी था। माधव जानता था कि बंटी गणित को छोड़कर सभी विषयों में ठीक-ठाक नंबर ला रहा है। गणित में तो उसका खाता ही नहीं खुलता था। माधव ने बंटी को समझाया अगर वह गणित पर थोड़ा ज्यादा ध्यान दे तो वह सेना का पेपर पास कर लेगा; फिर फिजिकल और मेडिकल टेस्ट को पास करने में कोई बाधा नहीं होगी"। बंटी को गणित में मार्गदर्शन की जरूरत थी

मगर गांव में कोई टीचर ही नहीं था जो परीक्षाओं के लिए गणित पढ़ा सके। अचानक बंटी ने माधव से पूछा "भाई तुम गांव में कब तक हो"? माधव ने जबाव दिया "महीना भर"। "यार तुम ही तो हमें गणित पढ़ा दो"! बंटी ने माधव से बड़ी उम्मीद से कहा। पहले तो माधव ने आनाकानी की पर बंटी के मनाने पर वह मान गया।

माधव सुबह-शाम को बंटी को पढ़ाने आने लगा। ज्यादातर समय माधव बंटी को गणित पढ़ाता और बाकी विषयों की स्थितियों का जायजा लेता रहता। बंटी का अधिकतर समय गणित के सवालों को हल करने और गणितीय सूत्रों का याद करने में बीतने लगा बाकी बचे हुए वक्त में वह अन्य विषयों पर ध्यान दिया करता था। समय के अभाव के चलते उसे दौड़ना बंद करना पड़ा। धीरे-धीरे कुछ ही सप्ताह की तैयारी के बाद बंटी के गणित में नंबर अच्छे आने लगे।

उधर, कस्तूरी का घर से निकलना मुश्किल होता पर पत्र व्यवहार बना रहा। महीना पूरा होते ही माधव शहर चला गया और बंटी को आगे की पढ़ाई की योजना बता गया। जाने से पहले वह कस्तूरी से मिला। कस्तूरी की आंखों में आसूं थे। माधव ने कस्तूरी से कहा कि तुम जानती हो मैंने बैंक का पेपर पास कर लिया है और जॉइनिंग आते ही मुझे रोकना नामुमकिन हो जाएगा। इधर, बंटी का पेपर नजदीक आ गया। इस बार उसकी तैयारी अच्छी थी। वह पिछले कुछ महीनों से घोर मेहनत कर रहा था। दूसरी तरफ, माधव इस इंतजार में था कि जॉइनिंग आए और वह कस्तूरी के घर रिश्ता भेजे। बंटी के पेपर से तीन दिन पहले माधव का पत्र आया कि घबराना मत, अच्छे से पेपर देना; गणित के सरल प्रश्नों को पहले हल कर लेना फिर कठिन पर जाना और सामान्य ज्ञान आदि को ध्यान से पढ़कर उसका उत्तर देना। बंटी का पेपर अच्छा गया कुछ सप्ताह बाद रिजल्ट आया। बंटी का चयन फिजिकल परीक्षा के लिए हो चुका था। इसी दौरान माधव कुछ दिनों के लिए गांव आया हुआ था। उसे बड़ा हर्ष हुआ कि उसका दोस्त सबसे कठिन चुनौती तो पार कर चुका है। फिजिकल और मेडिकल टेस्ट पास करना तो उसके लिए बच्चों का खेल था। समय तेजी से बीतने लगा। माधव की जॉइनिंग अभी तक नहीं आयी थी। कस्तूरी के पत्र भी अब काफी देर से आते। कारण था कि अब कस्तूरी पर नजर रखी जा रही थी। कस्तूरी के घरवाले कस्तूरी के मंसूबों को भांपने लगे थे। वहीं बंटी की कुछ दिनों में फिजिकल परीक्षा थी। वह जान लगाकर तैयारी कर रहा था; दिन में तीन वक्त कठिन प्रशिक्षण करना भी उसे कम लगने लगा था। घड़ी से समय मिलाने पर उसकी दौड़ तयशुदा समय से बीस सेकण्ड पहले पूरी हो रही थी। पूरे गांव को यकीन था कि बंटी फिजिकल परीक्षा देने जाएगा तो वर्दी लेकर ही लौटेगा! सरपंच साहब ने तो यहां तक कह दिया था कि "बंटी जैसे होनहार युवाओं की गांव को जरूरत है"।

इधर माधव बेहद परेशान था क्योंकि कस्तूरी के पत्र आना बंद हो गए थे। अब तक जॉइनिंग लेटर नहीं आया था। इधर बंटी का पत्र भी नहीं आया था जिससे पता चल सके कि फिजिकल टेस्ट का क्या हुआ। अब माधव से रहा नहीं गया। उसका इस शहर में एक दिन भी रूकना मुश्किल हो रहा था। वह अपने सारे काम छोड़कर गांव लौटा और सीधे बंटी के घर गया। बंटी घर के आंगन में जूते पहन रहा था। माधव को देखकर बोला "अच्छा किया माधव जो आ गए। चलो सामान यहां रख दो। मेरे साथ चलो नदी के साथ वाला पहाड़ चढ़ना है"। माधव तो कस्तूरी के ख्यालों में खोया उसकी एक झलक पाने को उतावला हो रहा था, मगर दोस्त की बात का इंकार कर न सका। दोनों दोस्त नदी वाले पहाड़ पर चढ़ने लगे। रास्ते भर बंटी चुप रहा। माधव ने हजार प्रश्न किए पर बंटी कहता रहा कि सारे जबाव पहाड़ पर मिलेंगे। पहाड़ पर चढ़ते-चढ़ते दिन ढल गया था। दोनों दोस्त बेहद थके हुए पहाड़ की एक शिला पर बैठ गए। धीमी मीठी हवा चल रही थी। गांव और नदी बेहद छोटे और प्यारे लग रहे थे। सर्दी का मौसम होने के कारण धूप आनंददायक थी। माधव कुछ कहता, इससे पहले ही बंटी ने अपनी जेब से एक पत्र निकालकर माधव को थमा दिया। पत्र खोलते ही माधव के चेहरे

की हवाईयां उड़ गई। बहुत ज्यादा थका होने के बाद भी वह बंटी पर पूरी ताकत से चिल्लाया "तुमने यह कैसे होने दिया? मुझे खबर क्यों नहीं की? नहीं! यह झूठ है"। मगर बंटी का सख्त चेहरा देखकर उसे यकीन हो जाता है कि यह पत्र सच है। यह पत्र कस्तूरी का था। कस्तूरी के पिता ने कस्तूरी की शादी दूसरी जगह कर दी थी। लड़का पुलिस में दारोगा है और उसके पिता गांव के जमींदार। माधव पूरा पत्र पढ़कर उसे जेब में रख लेता है। बंटी बड़े धीरे से उससे कहता है ''कस्तूरी के पिता ने उसे चेतावनी दी थी कि अगर वह उस दारोगा से शादी नहीं करेगी तो वह जहर खा लेंगे। ''भाई हमें माफ कर दो! हम तुम्हारा दर्द समझ सकते हैं" कि तुमने क्या खो दिया और हम इतने अभागे हैं कि कुछ कर भी नहीं पाए। कस्तूरी की शादी आनन-फानन में हुई थी। उस वक्त मै अस्पताल में भर्ती था। माधव की आंखों में आंसू थे। बंटी ने बताया ''मैं फिजिकल परीक्षा में दौड़ते समय बेहोश हो गया था। उन्होंने मुझे अस्पताल में भर्ती कराया तो पता चला टाइफाइड है। इस कमबख्त बुखार ने बीच दौड़ में ही अपना रौद्र रूप दिखाया। पहले मैं बेहद थक गया फिर चक्कर खाकर गिर गया। आंख खोली, तो अस्पताल में पाया खुद को। पता चला कि मेरा फिजिकल टेस्ट पूरा नहीं हुआ मतलब मैं फेल हो गया। यह बात सुनकर माधव बंटी को सीने से लगा लेता है और कहता है दोस्त इतना सब कुछ हो गया मुझे तो बताना था। कम से कम एक पत्र लिख दिया होता। देखो तुम्हारी सारी मेहनत पर पानी फिर गया। मुझे बड़ा दुख है। मुझे माफ करना। बंटी भावुकता से बोला "मित्र नौकरी तो तमाम मिल जाएंगी, पर जो तुमने खोया है, उसकी भरपाई करना मुश्किल है"।

बंटी ने आगे कहना जारी रखा कस्तूरी की शादी लड़का देखने के पांचवे रोज कर दी गयी। आधा गांव जानता था कि तुम बैंक में नौकरी करने लगे हो, कहीं लड़की भगा न ले जाओ। माधव बोला "अगर कस्तूरी के साथ भागकर शादी करनी होती तो अब तक कर चुका होता।" उसकी आंखों में आंसू थम नहीं रहे थे। बंटी ने आगे कहा "कस्तूरी बड़ी मुश्किल से बहाना बनाकर मेरे घर आई और मुझे यह पत्र देते हुए बोली" ''मैं यह पत्र तुम्हें दे दूं और उसकी तरफ से माफी भी मांग लूं कि वह अपने पिता की आज्ञा को नहीं टाल सकती"।

बैठे-बैठे रात हो चुकी थी। माधव को इतनी ज्यादा थकान थी कि उसे अब दुख और थकान में अंतर समझ नही आ रहा था। वे दोनों उस निर्जन पहाड़ पर घण्टों से भूखे-प्यासे बैठे थे। माधव पहाड़ पर ही सो जाना चाहता था, पर बंटी की प्रेरणा से दोनों पहाड़ से नीचे आने लगे। नीचे आते वक्त माधव ने आंसुओं से भरे अधरों के साथ कहा, ''मुझे डर था कि कस्तूरी के पिता उसकी शादी कहीं और न कर दें और हुआ भी यही। उसके पिता को मुझसे एक बार तो मिलना चाहिए था"। "कस्तूरी ने अंतिम पत्र में यह जिक्र किया था कि उसने मेरे बारे में अपने पिता को बता दिया है" माधव ने कहा। इस पर बंटी ने कुछ नहीं कहा। माधव और बंटी धीरे-धीरे चांद की रोशनी में पहाड़ से उतरने लगे। दोनो मौन थे। माधव अब चुप था मानो उसने स्वीकार कर लिया हो कि कस्तूरी अब अतीत है और जो हुआ है वह होना ही था। माधव बंटी को शुक्रिया कहते हुए कहता है कि "जंगबहादुर अब तुम उतने भी मूर्ख नहीं रहे, पहाड़ पर चढ़ाने का विचार अच्छा था"। बंटी ने मौन सहमति दी।

अगले दिन बंटी, माधव के घर जाता है और देखता है माधव आंगन मैं बैठकर एक पत्र पढ रहा है। बंटी को देखकर माधव कहता है कि "देख जंगबहादुर जॉइनिंग लेटर आ गया है"। बंटी लेटर पढ़ता है और मुस्कुराते हुए उसे माधव को वापस कर देता है। माधव सवाल करता है, "अब क्या करना है"? बंटी जबाव देता है ''नौकरी जॉइन करो दिल लगेगा।" बंटी अपनी बात पूरी कह पाता, इससे पहले ही माधव ने जॉइनिंग लेटर को पास जल रहे चूल्हे में फेंकते हुए कहा "कस्तूरी को पाने के लिए नौकरी की जरूरत थी। अब यह जरूरत शेष नहीं रही"।

आशुलिपिक
भारी उद्योग मंत्रालय

एक दिन....

प्रीती सागर

एक दिन मैं उठूंगी
और निकल जाऊंगी
चुपचाप दबे पांव
बिना किसी को बताये
बिना किसी से पूछे
नहीं, सत्य की खोज में नहीं
मुक्ति की तलाश में भी नहीं
बुद्ध की राह पर भी नहीं

एक दिन मैं उठूंगी
और निकल जाऊंगी
ये गिनने कि
आखिर इस दुनिया में
अब कितने बचे हैं
मेरी तरह के लोग,

एक दिन मैं उठूंगी
और निकल जाऊंगी
ये देखने कि
कैसे जीते हैं वो लोग
जिन्हें मेरी तरह
जीवन ने न जीने के
अनगिनत अवसर दिए,

एक दिन मैं उठूंगी
और निकल जाऊंगी
ये सुनने कि
कैसे कहा जाता है
अनकही व्यथाओं को,

एक दिन मैं उठूंगी
और निकल जाऊंगी
ये जानने कि
कैसे की जाती है वो यात्रा
जहाँ कहीं पहुँचना न हो

एक दिन मैं उठूंगी
और निकल जाऊंगी
ये समझने कि
क्यों खुद को समझना ही है
सम्पूर्ण दुनिया का सार।

निजी सहायक
भारी उद्योग मंत्रालय

तैयारी

श्वेता सिंह

जब चारों तरफ बहारें हों,
जीवन में चाँद सितारे हों,
कल कल बहती सुखधार हो,
दौलत हुस्न हथियार हो।

तुम समझ लेना वो आएगा,
बन काली घटा वो छाएगा।
तुम संभालना और होशियारी करना,
तुम अंधेरों की तैयारी करना।

यही खेल है सृष्टि का,
कहीं सूखा अतिवृष्टि का।
किसी को सब मिल जाएगा,
किसी से सब छीन जाएगा।

कोई जिस्म जलेगा भट्टी सा,
कोई महल गिरेगा मिट्टी सा।
तुम फिर से चार दिवारी करना,
तुम अंधेरों की तैयारी करना।

भला वक्त से लड़कर कौन जीता है,
जो नहीं लड़ा वह भी हरा।
अगर तुम जिंदा हो और जुनून है थोड़ा,
तुम लड़ जाना उसमें सुकून है थोड़ा।

इंतजार मत करना एक दिन अपने जलने का,
बुझती शाम और सूरज के ढलने का।
तुम सियाह रात उजियारी करना,
तुम अंधेरों की तैयारी करना।

सहायक अनुभाग अधिकारी
भारी उद्योग मंत्रालय

साहस

लोकेश घिल्डियाल

पुत्र

हे तात, आज अनुमति को आया
मैं युद्ध क्षेत्र में जाऊंगा
सीमा का निर्भय प्रहरी बन
भारत का मान बढ़ाऊंगा
दूंगा प्रचंड साहस परिचय
धरणी का कर्ज चुकाऊंगा
रक्त उफनता नित्य मेरा जब
दुश्मन आँख दिखाता है
भारत के शत्रु राष्ट्रों को,
दुर्जन अपना मित्र बताता है।
विश्व पटल पर जब-जब उसने,
भारत का अपमान किया,
तत्क्षण लगता है मानो
फिर मैंने विषपान किया।
सहन शील भारत को जब वो,
गत युद्धों की याद दिलाता है,
कोई पुराना घाव मुझे,
फिर-फिर पीड़ित कर जाता है।
तिलक लगा कर करो विदा,
शत्रु को पाठ पढ़ाऊंगा,
है संकल्प, मृत्यु ग्रास से पहले,
दुश्मन को मार गिराऊंगा।

पिता

पुत्र तुम्हारे साहस पर,
नहीं लेशमात्र भी शंका है,
अपनी मिसाइल क्षमता का भी,
सकल विश्व में डंका हैं।
किन्तु, शत्रु को मार गिरा दो,
इतना ही नहीं सलीका है,
भारत का परचम लहराने का,
और भी एक तरीका है।
भय, व्याकुलता, क्रोध, निराशा,
इनका तुम संहार करो,
नित नवीन उत्पाद बनाकर,
नव भारत का निर्माण करो,
छोड़ विदेशी संसाधन,
भारत निर्मित अंगीकार करो
कमियां बेशक दर्शाओ, पर
दो अवसर, कहो सुधार करो,
पर उसका घर मत भरो आज
जो देश हमें ललकार रहा
सीमा पर वीर सपूतों की
छाती पर बंदूकें तान रहा
घर-घर देश विदेशों में जब,
भारत निर्मित संसाधन आएगा,
रक्षा पर सौदे न होंगे,
हर औजार यहीं बन पायेगा
बन कर प्रकाश का स्रोत स्वतः,
भारत नभ पर छा जायेगा।
ऐसे उज्जवल सबल राष्ट्र का,
दुनिया लोहा मानेगी,
और विघटनकारी शत्रु शक्तियां,
थरथर-थरथर काँपेंगीं।
होगा सच्चा साहस ये,
भारत को सबल बनाएगा,
बेगारों को रोज़ी देगा,
भूखों को भोग लगाएगा।
साहस इतना ही नहीं कि
शत्रु को मार गिराना है
आज आत्मनिर्भर बन हमको
भारत निर्मित अपनाना है
हर वस्तु स्वदेशी हो अपनी
इस देशराग को गाना है
भारत का मान बढ़ाना है
और आगे बढ़ते जाना है।

वरिष्ठ प्रबंधक
बीएचईएल, नोएडा

थकान

मधुर कुमार जैन

थकान क्या है?
ऊर्जा की कमी या लक्ष्य की?
उत्साह की कमी या जीवन की?
या उदासी ज्यादा होना थकान है?
थकान कहीं भविष्य की चिंता तो नहीं!
या अतीत का सदमा!
थकान क्या है?

मैं कहता हूं....
'डर' है थकान।
'डर' पीछे रह जाने का।
'डर' अनिश्चितता का।
'डर' सपनों के टूट जाने का।

पत्थर नहीं थकता, मिट्टी नहीं थकती,
आसमान और नदियां नहीं थकते।
जंगलों को देखा है?
कभी थकते।
खैर छोड़ो तुम तो अभागे हो....
तुमने जंगल नहीं देखे,
दर्रे, घाटियां, पहाड़ और नदियां
कुछ भी नहीं देखे,
जंगलों और पहाड़ों की थकान,
बेहतर है मानसिक थकान से।

आशुलिपिक
भारी उद्योग मंत्रालय

भविष्य का बचपन

राजभवन

घुमाकर इन घड़ी की सुइयों को,
मैं अपने बचपन में जाऊंगा।
जमीन से उठाकर, वे सभी सूखी रोटियां,
चाय में डुबाकर खाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

जनवरी की सुबह में, मैं वापस बैटिंग करने जाऊंगा,
बचे हुए ओवरों को,
मैं अपने दोस्तों से फिर करवाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

एक दिन चुपके-चुपके मम्मी पापा के
कमरे में भी जाऊंगा,
जहां मम्मी काम के बाद थककर अपने
पैर खुद ही दबा रही होंगी,
अब की बार, मैं मम्मी को सॉरी बोलकर
उनके पैर दबाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

मेरे कहने पर पापा ने दो-दो ट्यूशन फीस दी थी।
पापा के पर्स में न जाने कितनी कर्ज वाली नोटे
पड़ी थी।
पापा के पर्स से बिन बताए लिए हुए,
दस रुपए के नोट को उनके पर्स में रखकर
आऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

अपना नया मकान तोड़कर, उसमें से ईंटों को
उठाकर
पापा का कच्चा घर, अब पक्का बनवाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

अपने पुराने घर के आंगन को फिर से खोदकर,
खेल-खेल मारी गई चीटिंयों को वापस जिंदा कर
दिखलाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

दादी के मसाले वाले हाथों को सूंघकर,
एक डायरी में नोट बनाऊंगा,
सुगंध का भी एक केमिकल स्ट्रक्चर हो सकता है।
यह दुनिया को बतलाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

दादा की छड़ी की लम्बाई
और उनकी गोद की गहराई नापकर,
एक सिद्धांत बनाऊंगा,
भय और प्रेम एक दूसरे के पूरक है,
यह सबको बतलाऊंगा।
मैं अपने बचपन में वापस जाऊंगा।

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
सीएमटीआई

वेद

अरुण कुमार दीवान

देव-वाणी हैं चार वेद।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान के वेद।
सृष्टि का आधाार वेद।
ज्ञान का अमृत-कुंड वेद।
वेदों के उपवेद चार, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, अर्थवेद
वेदों के ब्राह्मण चार, वेद ऋषि भी चार।
सृष्टि के आरंभ में ही दिया, ईश्वर ने अमृतसागर -
समाधि की अवस्था में ऋषियों को चार।
वेद श्रुति का पवित्र वाक्य, स्मृति का आधार,
उपनिषद और पुराण, वेदज्ञान के प्रकार।
शिक्षा, कल्प, निरूक्त, व्याकरण, ज्योतिष और छंद,
वेदों के छह अंग।
न अवतार, न मूर्तिपूजा, सबके लिए वेद-पठन।
इतनी महिमा वेदों की, सर्वज्ञतता और सर्वव्यापकता वेदों की।
मानव की प्राचीनतम सम्पदा वेद।
भारत की अतुलनीय गरिमा वेद।

निदेशक
(कॉर्पोरेट सेल)
भारी उद्योग मंत्रालय

पिताजी

शिव पूजन यादव

मुझे दिए ख़्वाब आपने,
सारे अपने ख़्वाब बेचकर,

शौक मेरे किए पूरे,
जरूरतें अपनी सभी रोककर।

ख़्वाहिशों को अपनी,
कभी मुझ पर थोपा नहीं,

सब कुछ करने की दी आज़ादी,
कभी भी रोका नहीं।।

चोट शरीर की हो या मन की,
कभी हमे बताते नहीं,

प्यार आँखों से उमड़ जाए पर,
शब्दों में जताते नहीं।

आज भी जब भी कभी,
ख्याल उनके आते हैं,

भावनाएं पीछे रह जातीं,
आँसू पहले आते हैं।।

आज भी कहते हैं बेटा!
जो ठीक लगे, वो ही करो,

मैं तुम्हारे साथ हूँ,
दुनिया की न कभी परवाह करो।

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारी उद्योग मंत्रालय

पापा

सोनाली सागर

छत सिर्फ घर की नहीं होती,
जाना घर में रहते हुए

जाना सर की छत क्या है,
दुनिया की रौ में बहते हुए,

पापा तुमको देखा मैंने दिन
भर मेहनत करते हुए

हमारी इच्छाओं की खातिर
सुबहो शाम थकते हुए,

जब मैं साथ तुम्हारे थी,
तब फिक्र की कोई बात नहीं

दूर हुई जब तुमसे जाना,
पापा जैसा कोई साथ नहीं

तुम चेहरा मेरा पढ़ लेते थे,
जब कोई मुश्किल आई

इस दुनिया में मुश्किल वक्त
में पापा जैसा हाथ नहीं

यूं तो सहारे और बहुत हैं,
तुम सा सहारा कोई नहीं

अब मुझको एहसास हुआ कि
तुमसे प्यारा कोई नहीं....

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारी उद्योग मंत्रालय

बारिश की ये बूँदे

देवेंद्र कुमार

फिर घुमड़-घुमड़ कर आए बादल
फिर छाई आसमान में काली घटा
सहसा मुख पर पड़ी बारिश की बूँदे
भीषण गर्मी की तपन से तन-मन को
शीतल कर गई बारिश की ये बूँदे।
किसान की मेहनत से उगाई
फसल को लहलहा गई बारिश की ये बूँदे।
प्रत्येक जीव के अवचेतन मन में
चेतना जगा गई बारिश की ये बूँदे।
धरती माँ की भी प्यास बुझा गई
बारिश की ये बूँदे।
प्रकृति-जगत में हरियाली लाई बारिश की ये बूँदे।
मोर को प्रसन्न होकर नृत्य करने को प्रेरित कर गई बारिश की ये बूँदे,
धरती पर गोल-गोल घेरे बना गई ये बारिश की बूँदे।
व्यथित मन को प्रसन्नता से भर गई बारिश की ये बूँदे,
जल-स्रोतों को जल से संचित कर गई बारिश की ये बूँदे।
सभी के मन को प्रफ्फुलित कर गई बारिश की ये बूँदे।

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारी उद्योग मंत्रालय

मंत्रालय और अधीनस्थ कार्यालय में हिंदी की प्रगति

मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने और संसदीय राजभाषा समिति की अपेक्षाओं को कार्यरूप देने के उद्देश्य से राजभाषा अधिनियम, 1963 और राजभाषा नियम, 1976 को कार्यान्वित कर रहा है और राजभाषा हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

वर्ष 2023-24 के दौरान संसदीय स्थायी समिति संबंधी कार्य, मंत्रिमंडल नोट, अधिसूचनाएं, संकल्प, परिपत्र, संसदीय प्रश्नोत्तर तथा संसद के दोनों पटलों पर रखे जाने वाले कागजात, वार्षिक रिपोर्ट, विभिन्न अवसरों के लिए भाषणों, संदेशों तथा सामान्य आदेश आदि सहित अन्य अपेक्षित दस्तावेज़ हिंदी और अंग्रेजी-दोनों रूप में जारी किए गए। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय में सभी विज्ञापन द्विभाषी जारी किए जा रहे हैं। मंत्रालय अपनी वेबसाइट को द्विभाषी रूप से अद्यतन रखने के लिए भी प्रयासरत है।

वर्ष के दौरान, हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति का जायजा लेने के लिए मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कार्यालयों की निगरानी बढ़ाई गई और कार्यालयों को राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने संबंधी सुझाव दिए। इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और विभिन्न अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी के कामकाज में प्रगति देखी जा रही है।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा फरवरी 2024 में बीएचईएल, मुंबई कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष के दौरान भारी उद्योग मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों-बीएचईएल-आरओडी (दिल्ली), बीएचईएल-तरनतारण (पंजाब), बीएचईएल-वाराणसी, बीएचईएल-अमेठी, एआरएआई- पुणे, ईपीआईएल- मुंबई और बीएचईएल-ईएमआरपी, मुंबई कार्यालयों के निरीक्षण किए। मंत्रालय के कुशल नेतृत्व और निगरानी के कारण अधिकांश निरीक्षण सफल रहे तथा समिति ने इन कार्यालयों में हिंदी

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा बीएचईएल, मुंबई कार्यालय का निरीक्षण

के कामकाज पर संतोष व्यक्त किया। समिति के राजभाषा संबंधी निरीक्षणों से मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा के उपयोग को बढावा देने में काफी वृद्धि हुई है। इन निरीक्षणों में मंत्रालय की ओर से संयुक्त सचिव और अन्य नामित अधिकारियों ने मंत्रालय का प्रतिनिधित्व किया।

हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

मसूरी (उत्तराखंड) में हिंदी सलाहकार समिति की सातवीं बैठक में माननीय मंत्रीजी के साथ सदस्यगण

मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति की सातवीं बैठक का माननीय भारी उद्योग मंत्रीजी की अध्यक्षता में 16 जून, 2023 को मसूरी (उत्तराखंड) में भव्य आयोजन हुआ। बैठक में शामिल सरकारी सदस्यों ने समिति की छठी बैठक (गंगटोक: 15 मई, 2022) में लिए गए निर्णयों के अनुपालन के मामले में हुई प्रगति की जानकारी दी। समिति के माननीय सदस्यों ने मंत्रालय और इसके अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी का प्रसार और अधिक बढ़ाने संबंधी सुझाव दिए जिनके संबंध में माननीय मंत्रीजी द्वारा दी गई व्यवस्था पर मंत्रालय और अधीनस्थ कार्यालयों ने अमल के लिए कार्रवाई की।

मसूरी (उत्तराखंड) में हिंदी सलाहकार समिति की सातवीं बैठक

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

राजभाषा विभाग में 17 अक्तूबर, 2023 को आयोजित 45वीं केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संयुक्त सचिव (प्रभारी, राजभाषा) श्री विजय मित्तल ने सहभागिता की और मंत्रालय में हिंदी संबंधी प्रयासों पर प्रस्तुति दी। बैठक में, राजभाषा विभाग ने भारी उद्योग मंत्रालय में हिंदी के कामकाज की प्रशंसा की और संयुक्त सचिव श्री विजय मित्तल से अनुरोध किया कि मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे सर्वोत्तम प्रयासों से राजभाषा विभाग को अवगत कराया जाए। तदनुसार, राजभाषा विभाग को मंत्रालय और इसके अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी संबंधी विशिष्ट प्रयासों की जानकारी दी गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

मंत्रालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए श्री विजय मित्तल, संयुक्त सचिव की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का समय-समय पर आयोजन किया गया। इन बैठकों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने पर विचार-विमर्श किया गया, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2024-25 पर चर्चा की गई तथा मंत्रालय में हिंदी के कामकाज की समीक्षा के क्रम में आवश्यक निदेश दिए गए।

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह में निदेशक द्वारा संयुक्त सचिव का अभिवादन

मंत्रालय में 16.09.2023 से 28.09.2023 तक हिंदी पखवाड़े के दौरान 09 प्रतियोगिताओं यथा- अनुच्छेद लेखन प्रतियोगिता, कथाकहन प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी व्याकरण और राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, आशुभाषण प्रतियोगिता, टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता, वाचन प्रतियोगिता, श्रुतलेखन/शब्दज्ञान प्रतियोगिता तथा सितंबर 2023 माह में हिंदी में अधिकाधिक कार्य प्रतियोगिता में अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। उक्त प्रतियोगिताओं में 'कथाकहन' और 'वाचन' दो नई प्रतियोगिताएं पहली बार आयोजित की गई थीं जिनमें कर्मियों ने काफी अधिक रूचि दिखाई।

हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार प्रदान करते हुए संयुक्त सचिव श्री विजय मित्तल

हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं के अतिरिक्त हिंदी में प्रशंसनीय कार्य के लिए मंत्रालय के चार अनुभागों को भी पुरस्कृत किया गया।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी के उपयोग के प्रति जागरूकता सृजन के लिए वर्ष के दौरान कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें प्रतिभागियों को तिमाही प्रगति रिपोर्ट सही तरीके से भरने और सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक उपयोग के लिए राजभाषा विभाग और संसदीय राजभाषा समिति की अपेक्षाओं/लक्ष्यों के बारे में जागरूक किया गया ताकि सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग हो। प्रतिभागियों ने कार्यशालाओं में गहरी रुचि दिखाई और हिंदी से संबंधित कई प्रश्न पूछे, जिनका तुरंत समाधान किया गया। नवीनतम ऑनलाइन कार्यशाला अधीनस्थ कार्यालयों के लिए 30.08.2024 को आयोजित की गई। कार्यशाला में राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जारी दिशा-निर्देशों के संबंध में जानकारी दी गई तथा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास करने के लिए कहा गया।

हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागी

हिंदी प्रशिक्षण

मंत्रालय में हिंदी के कामकाज को बढ़ावा देने के लिए वर्ष के दौरान कुल 6 कर्मचारियों को हिंदी टंकण प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया। वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री देवेंद्र कुमार ने पदोन्नति के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। वर्तमान में, सहायक निदेशक श्री कुमार राधारमण पदोन्नति के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

बीएचईएल को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'

मंत्रालय के अधीनस्थ महारत्न कंपनी बीएचईएल को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय तृतीय 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। गृह राज्यमंत्री श्री नित्यानंद राय ने यह पुरस्कार 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में बीएचईएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री के. सदाशिव मूर्ति को प्रदान किया।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण करते बीएचईएल के अधयक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

भारत मंडपम, नई दिल्ली में 1 अक्तूबर 2024 को पीएम ई-ड्राईव का शुभारंभ

इलेक्ट्रिकल उपकरण गुणवत्ता नियंत्रण के संबंध में 6 जून, 2024 को नई दिल्ली में हितधारकों हेतु कार्यशाला

भारी उद्योग मंत्रालय
भारत सरकार